गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/ICD/1252/2015-2017 सेवा में,

मासिक
गोलालारीय दर्शन

अपनों के साथ अपनी बातें

golalariya.darshan@gmail.com
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं । हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं ।

वर्ष : 7 अंक : 12 पृष्ठ संख्या : 12 माह – 15 अक्टूबर 2016 सहयोग राशी – आजीवन सदस्य बनें ।

आचार संहिता चुनाव के समय ही क्यों? हमेशा क्यों नहीं ?

साधना जैन, संजय जैन लालू, भोपाल । गांधी जयंती के अवसर पर भव्य अहिंसा रैली आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के सानिध्य में आज टीन शेड जैन मंदिर से रोशनपुरा राजभवन होती हुई एम.वी.एम कॉलेज पहुंची जहां मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान वित्त मंत्री जयंत मलैया, श्रीमति साधना चौहान और प्रमोद हिमांशु आदि ने उनकी अगवानी की । रैली अपने गंतव्य लाल परेड मैदान में पहुंचकर धर्म सभा में तब्दील हो गई । रैली में समस्त मुनिगण, ब्रह्मचारी दीदीयां, साथ में 4000 युवा अपने हाथों में अहिंसा संबंधी स्लोगन की तख्तियां लेकर चल रहे थे । लाल परेड मैदान पर 25000 से भी अधिक श्रावकों की उपस्थिति में सर्वप्रथम श्रीमति सुधा मलैया ने मंगलाचरण से धर्मसभा का प्रारम्भ किया । चित्र अनावरण श्री शिवराजसिंहजी, जयंत मलैया, आलोक संजर, आलोक शर्मा ने किया । मुख्यमंत्री ने सपत्नीक श्रीफल भेंट किया । इस अवसर पर जयंत मलैयाजी ने अपने उदगार व्यक्त किये । उन्होंने कहा हमारा सौभाग्य है गुरुवर राजधानी में आज गांधीजी और शास्त्री जी की जयंती पर हमारे निवेदन पर क्षमावाणी में पधारे । शिवराज सिंहजी ने कहा कि हम धन्य है जो आचार्य श्री के युग में हमारा जन्म हुआ है। गांधीजी को नही देखा परंतु वे गुरुवर से भिन्न नही होगें । जगत के कल्याण के लिए सदमार्ग पर दुनिया को चलाने का कार्य आचार्यश्री कर रहे है और वो सिर्फ जैन के नहीं जन जन के है । क्षमा कमजोरों कायरों का धर्म नही है क्षमा एक विज्ञान है वेद है पुराण है। ये मानव जीवन सफल हो, सदबुद्धि मिलती रहे, सन्मार्ग पर चलते रहे, ये आप जैसे गुरु से आर्शीवाद मांगते हैं । उन्होंने कहा कि जब तक जितनी गाय है उतनी गौशालाएं प्रदेश में न खुल जाए तब तक में चैन से नही बैठूंगा । नशामुक्त प्रदेश की कल्पना को साकार करना है । इस अवसर पर परम पूज्य आचार्य श्री ने कहा की धरती का नाम क्षमा है, कीट पतंगे नदी नाले सभी इस धरती की गोदी में विचरण करते है, स्वर्ग से अच्छी धरती है ये भारत की धरती । अहिंसा को प्रणाम करने से अहिंसा का पालन नही होता । अहिंसा एक निषेधात्मक शब्द है । उन्होंने कहा की श्रम के बिना पुरुषार्थ, पुरुषार्थ के बिना पुरुष का जीवन अधूरा होता है । धरती की दरारें पानी की बूंदों से भरती और जीवन की दरारें क्षमा से भरती है । पात्र के बिना पानी टिक नहीं सकता और पात्र के बिना प्राणी टिक नही सकता । शिक्षा हमेशा कर्म की होती है जबकि आज शिक्षाकर्मी की शिक्षा चल रही है। भारत की मर्यादा खेतीबाडी है । शिक्षा ऐसी हो जो भारतीय संस्कृति के आधार पर होना चाहिए परंतु बिना सिंग और पूँछ ही शिक्षा चल रही है। बड़े बड़े स्नातक आज बेरोजगार घूम रहे है अनेक इंजीनियर कर्जे से दबे हुए है उन्हे ऋणी बना दिया है। विश्व बैंक के कर्जे से भारत की बैंक भी दब रही है । आर्थिक गुलामी के दौर से भारत गुजर रहा है । शिक्षा लेकर अपना अच्छा कर्म करें पुरुषार्थ करें । बाबू बनने के चक्कर में कर्म से दूर हो रहे हैं आज देश के युवा । श्रम रहित समाज गुलामी की मानसिकता का प्रतीक बन जाता है । गुरुवर ने कहा कि किसान आज पूरा कर्म करने के बाद भी दुखी क्यों है इस पर विचार करने की जरूरत है। आज इंडिया की नही प्राचीन भारत की कृषि को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है । आचार संहिता चुनाव के समय ही नही बल्कि हमेशा के लिए लागू होना चाहिए 70 साल हो गए आजादी को परंतु जनता का पक्ष कमजोर आज भी है । आज विदेशी भाषा

शेष पृष्ठ क्रं. 11 पर.....

भौतिकता को छोड़ संस्कारों को स्वीकारना होगा

अनुपमा जैन, अर्चना जैन, इन्दौर । 1008 श्री महावीर स्वामी का ''जीओ और जीने दो'' का अमर संदेश देते हुए 18 सितम्बर सुबह 6.30 बजे दो पहिया वाहनों पर हजारों लोगों का कारवां तिलक नगर से गोम्मटगिरी की ओर बढ़ा । पुरुष वर्ग सफेद परिधान के साथ सिर पर गुलाबी साफा, गले में पचरंगी दुपट्टा, महिलायें केशरिया वस्त्रों में व युवा मातृशक्ति सफेद सलवार सूट के साथ हाथो में जैन ध्वजा व तख्तियां लिए अहिंसा के संदेशों के साथ 'बेटी बचाओ, पर्यावरण और गौ रक्षा का संदेश' नगर वासियों को देते हुए चल रहे थे ।

सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में नगर के 110 मंदिरों के समाजजन उत्साह के साथ शामिल हुए । चार चार वाहनों की कतार में चल रही अहिंसा रैली तिलक नगर से प्रारंभ होकर विजय नगर, क्लर्क कालोनी, छत्रपति नगर होते हुये गोम्मटगिरी पहुंची । जगह जगह रैली का स्थानीय समाज ने भव्य स्वागत किया । रैली वापसी में कालानी नगर, बड़ा गणपति, पलासिया होते हुए तिलक नगर पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तित हो गई । मंगलाचरण का वाचन मधुर कंठी श्रीमती सीमा अजित जैन ने किया । डॉ. रेखा दीदी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन से सभा को अल्हादित कर दिया । अंत में 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की परम योग्य शिष्या 105 आर्यिका आदर्शमति माताजी नेअपने उद्बोधन में कहा कि अगर हमें शांति स्थापित करना है तो भौतिकता छोड़ संस्कारों की बात करना होगी । आज हमारी कमीज पर आचरण का बटन लगा होना था लेकिन वहां पाश्चात्य संस्कृति का बटन

जड़ा हुआ है । हम पाश्चात्य संस्कृति में जकड़े हुए है इसलिए हमारा स्वभाव भी अकड़ा हुआ है । हमें नैतिकता के आगे झुकना सीखना होगा, झुकना जिंदा लोगों की पहचान है और अकड़े रहना मुर्दों की पहचान है । इतिहास उज्जवल हीरों से बनता है, घास के तिनकों से नहीं । जिस प्रकार मिट्टी की एकता से ईंट, ईंट की

शेष पृष्ठ क्रं. 4 पर.....

गोलालारीय दर्शन समाज के 4200 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है । संभव है डाक व्यवस्था या आपका पता सही न होने के कारण पत्रिका आपको व आपके रिश्तेदारों तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें या 9424013136 पर दोप. 4 से रात्रि 10 तक संपर्क कर सकते है या अपने पता का एसएमएस कर सकते है ।

परामर्श प्रमुख

श्री कैलाशचंदजी जैन, झाँसी
श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, अहमदाबाद
डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत
डॉ. कपूरचंद जैन, खतौली

प्रधान संपादक
सिंघई राजेन्द्र जैन, 9407453066

सह संपादिका
श्रीमती अर्चना अजय जैन, 9827796013
श्रीमती अनुपमा रजनीश जैन, 9009066884

कोषाध्यक्ष -
सुधेश कुमार जैन, 9827254111

प्रबंध संपादक
राजेन्द्र कुमार जैन, सायकलवाले, 9425353972
खुशालचन्द जैन, 9302123879
कोमलंचद जैन, 9329524227

(संयोजक एवं प्रकाशक)
बाहुबली जैन, 9827247847

शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक अपना संक्षिप्त परिचय सपत्नीक फोटो सहित एवं संरक्षक तथा विशेष सहयोगी सदस्य अपना संक्षिप्त परिचय फोटो सहित भेजे ताकि प्रकाशन किया जा सके।

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक (अ.जा.)	21000/-
परम संरक्षक (अ.जा.)	11000/-
संरक्षक (अ.जा.)	5100/-
विशेष सहयोगी (अ.जा.)	2100/-
आजीवन शुल्क (अ.जा.)	1100/-
सहयोग राशि	500/-

आप 'गोलालारीय दर्शन' के बैंक खाते में सहयोग राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्रं. 63048875855 IFSC Code: SBIN0030134 में चेक द्वारा ही जमा कर स्लीप की फोटोकॉपी व अपना नवीन फोटो मय जानकारी के हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड व कार्यालय पते पर अवश्य भेजें ताकि आपको रसीद भेज कर आपका विवरण प्रकाशित किया जा सके।
नोट - 8 मार्च 2014 से अन्य शहरों से जमा की जाने वाली राशी पर बैंक शुल्क न्यूनतम 50 रु. कर दिया है।

अत: बायोडाटा शुल्क मल्टीसिटी चेक के द्वारा ही पत्रिका के पते पर भेजे।

विज्ञापन दर (कलर)

अंतिम पेज	15000/-
फुल पेज (अंदर)	11000/-
1/2 पेज	5000/-
1/4 पेज	3000/-
मांगलिक बधाई फोटो सहित	3000/-
शोक संदेश फोटो सहित	1000/-
बॉयोडाटा फोटो सहित	250/-

बायोडाटा, समाचार व अन्य कोई जानकारी पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु गोलालारीय दर्शन 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर अथवा श्री राजेन्द्रकुमार जैन हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड़, इन्दौर पर भेंजे।

जैन जगत ने खोया एक इतिहास महारथी - डॉ. कपूरचंद जैन खतौली।

संपूर्ण विद्वत जगत एवं जैन जगत में वक्ता, प्रवक्ता, आगमवेत्ता, लेखक, पत्रकार आदि तो बहुत हैं लेकिन जैन जगत की विशेषताएं बताने वाले इतिहासकार पुरुष यदि कोई थे तो वे एकमात्र व्यक्ति थे ''डॉ. कपूरचंद जैन, खतौली''। जो अपनी सादगी, सहजता,सरलता व अपनत्व के कारण जाने जाते थे।

सरस्वती पुत्र डॉ. कपूरचंद जैन अंहकार, लोभ व आत्म प्रशंसा से कोसों दूर थे। आपका जन्म 1954 में बरधुवाँ (दतिया) में श्री लक्ष्मीचंद-दक्खाबाई जैन के घर हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा बरुआ सागर से प्राप्त कर आप उच्च शिक्षा के लिए बनारस गये। एम.ए. पश्चात 1977 में आप कुन्द कुन्द महाविद्यालय खतौली में प्राध्यापक, 1980 में संस्कृति विभाग अध्यक्ष व 1990 में रीडर बने। इसी बीच 1985 में बरेली से पुरुदेव (ऋषभदेव) चम्पू पर पी.एच.डी. पर तत्कालीन जैन दर्शन का सर्वोच्च पुरस्कार ''महावीर पुरस्कार'' मिला। शास्त्री परिषद पुरस्कार, ऋषभदेव पुरस्कार, सहजानंद वर्णी पुरस्कार, आचार्य ज्ञानसागर पुरस्कार व अनेक पुरस्कार आपको प्राप्त हुये। 'स्वतंत्रता संग्राम में जैन' (प्रथम खंड) को तैयार करने में आपको 12 साल लगे। इस ग्रंथ में उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश व राजस्थान के 20 जैन शहीदों व 750 जेल यात्रियों का परिचय है। 'जैन विरासत' आपकी बहुचर्चित कृति है। आप नये विद्वानों व विद्यार्थियों को प्रेरणा देने में कभी पीछे नहीं रहे। इसी कारण से आप उनके बीच बहुत ही लोकप्रिय रहे।

संपूर्ण समाज में डॉ. कपूरचंद जैन व डॉ. ज्योति जैन का यह विद्वत जोड़ा किसी जुगाड़ या भाई भतीजावाद के कारण नहीं वरन् अपनी मेहनत, कार्यों व योग्यता के कारण पहचान रखता है। डॉ. कपूरचंदजी ने जैन जगत का इतिहास का गौरव बताते हुए 22 जुलाई 2016 को परम ज्योति में विलीन हो गये। जिससे संपूर्ण जैन जगत में शोक की लहर छा गई। जैन जगत के इतिहास को बताने वाली अनेक योजनायें उनके साथ ही समाप्त हो गई, इससे समाज को जो हानि हुई है उसका आकलन करना असंभव है। उनका असामयिक निधन हमें उस वेदना से आगाह करता है कि हमें हमारे विद्वानों को कितना सम्हालकर रखने की आवश्यकता है। डॉ. कपूरचंदजी ने जो किया वह लाखों करोड़ों रुपये में भी कोई नहीं कर सकता है।

श्री गणेशप्रसाद वर्णी के जीवन को आत्मसात करने वाले महामना इतिहासकार डॉ. साहब की विरासत को सहजने की आवश्यकता है। उनके हर कार्य में परछाई की तरह साथ निभाने वाली डॉ. ज्योति जैन जिन्हें असमय यह व्रजपात सहना पड़ा। वे आगम को जानती है, अपनी जिम्मेदारी भी समझती है। संपूर्ण जैन समाज उनसे आग्रह करे कि वे उनके शेष कार्यों को पूर्ण कर समाज के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करे। हम सभी का कर्त्तव्य है कि ऐसे महारथी व्यक्तित्व के जीवन का हमारी आने वाली पीढ़ी अध्ययन करे व जाने कि किस तरह समर्पण से कार्य किया जाता है।

सादा जीवन, उच्च विचार के धनी डॉ. कपूरचंदजी ने जैन धर्म, संस्कृति के अनछुये पहलुओं के प्रचार प्रसार में पूरा जीवन समर्पित कर अपने संकल्प को पूरा किया।

फूल तो नहीं रहा मगर सौरभ कायम है,
नाविक तो नहीं रहा मगर किनारा कायम है।
न भूलेंगे आपके उपकारों को हम,
दीप तो रहा नहीं मगर ज्योति कायम है॥

जैन जगत के गौरवशाली अतीत को प्रकाश में लाने वाले डॉ. कपूरचंदजी जैन खतौली को गोलालारीय दर्शन परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

बधाईयाँ

मास्टर प्रणय संजय अंजू जैन ने 11 वर्ष की छोटी सी उम्र में लगातार 9 घंटे ड्रम बजाकर दो वर्ष पूर्व गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड बनाया था, तभी से नगर की संगीत से जुड़ी संस्थायें व व्यक्ति उनकी प्रतिभा को निखारने के लिए विभिन्न आयोजन कर संगीत के क्षेत्र में उन्हें नये आयाम स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करते रहे है। संगीत के माध्यम से ही मास्टर प्रणय ने इन्दौर के प्रसिद्ध बड़े अस्पताल के जीर्णोद्धार हेतु 1 लाख रुपये की राशि इन्दौर कमिश्नर को भेंट की है। मास्टर प्रणय जैन द्वारा शीघ्र ही एक ट्रस्ट का निर्माण किया जा रहा है जिसमें आंखो से संबंधित बीमारियों का ईलाज व 5000 ऑपरेशन कराने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। गोलालारीय परिवार उनके इस अद्भुत मिशन के लिए अपनी शुभकामनायें प्रेषित कर उनके इस समाजसेवी भाव को साधुवाद करता है।

डॉ. राहुल अशोककुमार जैन ने बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय से एप्लाइड इकोनामिक्स एंड बिजनेस मेनेजमेंट विषय के अंतर्गत ''एनालिसिस ऑफ एक्सपोर्ट मार्केट ऑफ फूड प्राडक्ट इन इंडिया विद रेफरंस टू मिडिल ईस्ट कंट्रीज''पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। जिसके मार्गदर्शक डॉ. राजीव चौबे और डॉ. संजय जैन थे। गोलालारीय दर्शन परिवार की ओर से बहुत बहुत बधाई।

अंकुश अनिल-कल्पना जैन (सहा. प्रबंधक) मन्दसौर को एम.फार्मा में मध्यप्रदेश में टॉप करने पर स्वर्ण पदक राज्यपाल एवं कुलपति महोदय द्वारा भोपाल में दीक्षान्त समारोह में प्रदान दिया गया।

कु. प्रिया

जीत लिया जहां....

कु. आयुषी

सम्मान की बात होती है। और यदि यही परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण कर ली जाये तो निःसंदेह गर्व का विषय हो जाता है। ये सम्मान अर्जित किया है हमारे समाज की दो होनहार छात्राओं ने इंदौर से। ये है **प्रिया प्रवीण जैन और आयुषी रजनीश जैन**। इन दोनों छात्राओं ने तमाम बाधाओं को पारकर न केवल इस कठिन परीक्षा को पास किया साथ ही साथ इस धारणा को भी तोडा है कि चार्टर्ड अकाउंटेसी जैसे क्षेत्र महिलाओं के लिए आसान नही है आज इनकी इस उपलब्धि पर इनके पूरे परिवार ही नही पूरे समाज को भी गर्व की अनुभूति हो रही है। इनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए गोलालारीय दर्शन शुभकामनायें देता है कि इनकी सफलताओं से कल पूरे देश को भी इन पर गर्व हो।

** प्रोत्साहित करें **

आपके परिवार के किसी भी सदस्य ने किसी भी क्षेत्र में विशेष उपलब्ध अर्जित की हो। वह हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है। हम चाहते है सुखद पल को सभी समाजजनों के साथ बांटा जाये इसीलिये आप उनकी उपलब्धियों का पूर्ण विवरण फोटो के साथ गोलालारीय दर्शन के पते पर या ईमेल पर भेजें। (योग्य होने पर प्रकाशित किया जावेगा।)

छोटी सी उम्र में तत्वार्थ सूत्र का वाचन

संत शिरोमणि 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की आज्ञानुवर्ती शिष्या आर्यिका 105 श्री आदर्शमति माताजी की संघस्थ आर्यिका श्री अनुग्रहमति माताजी के परम सानिध्य में पर्वराज पयूर्षण पर्व में सुगंध दशमी पर 1008 श्री चन्द्रप्रभ जिनालय उदय नगर में मा. निपुण जैन सुपुत्र श्री नागेन्द्रजी जैन के द्वारा तत्वार्थ सूत्र के 10 अध्यायों का वाचन बहुत ही सुंदर एवं स्वच्छ भाषा शैली में प्रस्तुत किया गया। जिसकी कभी कल्पना किसी ने भी नहीं की थी कि 7 वर्ष की उम्र में इतने कम समय में पूज्य माताजी द्वारा बच्चे को इतने अच्छे तरीके से जैन दर्शन एवं संस्कारों का जो बीज डाला है वह इतनी जल्दी अंकुरित होकर साकार रूप में परिवर्तित हो जायेगा। क्षमावाणी के अवसर पर ब्र. अभय भैयाजी के मार्गदर्शन पर निपुण जैन ने तत्वार्थ सूत्र के एक अध्याय का वाचन किया। यदि किसी बच्चे में सीखने की इच्छाशक्ति, लगन हो और गुरु, माता-पिता का सही मार्गदर्शन निरंतर मिलता रहे तो समाज का प्रत्येक बच्चा छोटी से छोटी उम्र में बड़ी से बड़ी धार्मिक शिक्षा ग्रहण कर धर्म की वीणा बजा सकता है। ऐसे प्रतिभाशाली एवं समाज को गौरवान्वित करने वाले मा. निपुण जैन एवं उनके माता पिता श्री नागेन्द्र-पूर्णिमा जैन को समाज एवं गोलालारीय दर्शन की ओर से ढ़ेरो शुभकामनाएँ, बधाईयाँ।

स्व. श्री हेमचंद मोदी की स्मृति में डायग्नोस्टिक सेंटर पिनेकल का शुभारम्भ

समाज के प्रतिष्ठित डॉ. रुपेश मोदी ने अपने पिताजी की स्मृति में शहर के मध्य श्री हेमचंद मोदी मेमोरियल डायग्नोस्टिक सेंटर 'पिनेकल' का शुभारंभ 28 अगस्त को श्री वी.के. माथुर, मुख्य आयकर आयुक्त के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर नगर के कई प्रसिद्ध डाक्टरों के अतिरिक्त समाज के अनेक वरिष्ठजन उपस्थित थे। डॉ. रुपेश ने इस अवसर पर बताया कि समाजजनों को 30% रियायती दरों पर पेथोलॉजी व रेडियोलॉजी की सभी तरह की जांच की जावेगी। शीघ्र ही नगर के अन्य स्थानों पर भी सेम्पल कलेक्शन सेंटर प्रारंभ करने की योजना भी है ताकि अधिकाधिक समाजजनों को सुविधाओं का लाभ प्राप्त हो सके। डॉ. रुपेश मोदी गत कई वर्षों से समाजजनों को चिकित्सा परामर्श प्रदान कर रहे हैं व समाज के विकास कार्यों में आपका सहयोग निरंतर प्राप्त होता रहा है।

अपने आप से पूछो ?

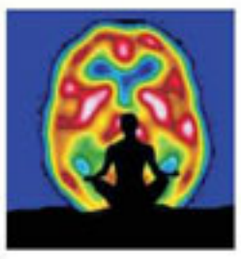

किरण जैन फणीश, इन्दौर। हम पवित्र कुल जैन धर्म में उत्पन्न हुए हैं। हमें जैन ग्रन्थों में अध्ययन चिंतन मनन का सुयोग्य अवसर मिला है साथ ही पूजा भक्ति आदि का सहज ही सुअवसर प्राप्त हुआ है, दशलक्षण पर्व हम दस दिन जिनेन्द्र देव की पूजा भक्ति कर मनाते हैं। हमें दिगम्बर साधुओं के दर्शन, आहार, वैयावृत्ति तथा उनके द्वारा त्याग साधना का उपदेश भी मिल रहा है। ऐसे समय में क्या हमने कभी आत्म विकास के बारे में अथवा आत्म चिन्तन के विषय में आपने स्वयं से प्रश्न किये है।

1.क्या हमे विश्वास है कि हम स्वयं ही अपने भाग्य निर्माता है। अन्य कोई हमारे सुख दुख मे भागीदार नही हो सकता।

2.क्या यह दृढ़ श्रद्धा है कि पंच परमेष्ठी तथा स्वयं की आत्मा के सिवाय संसार में कोई शरण भूत नही है

3.क्या हमे यह विश्वास है कि हम पूर्व से बंधे पाप-पुण्य का फल भोग रहे हैं? वर्तमान में किये पाप पुण्य का फल आगामी काल में स्वयं भोगेगे तो क्या हम पापो से भयभीत है ?

4. क्या हमें यह मालूम है कि नरक तिर्यंच गति में दुख ही दुख है? मनुष्य और देवगति में भी सच्चा सुख ही सुखाभास है। तो क्या हम चर्तुगति भ्रमण मेटना चाहते है ? अविनाशी अक्षय पद प्राप्त करना चाहते हैं।

5. क्या हमने जानने की कोशिश की, कि संसार परिभ्रमण का मूल कारण मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, प्रसाद, मोह है तो क्या हम उन्हे छोड़ने या घटाने का सही पुरुषार्थ करते है ?

6. क्या हम सम्यकत्व और मिथ्यात्व की परिभाषा को समझते है संकट आने पर हम कुदेव आदि को तो नही पूजते ? क्या हमे यह विश्वास है कि अन्य देवी देवता हमारा भला बुरा नही कर सकते ? सच्चे देव ही शरण भूत है।

7. क्या हम धर्म के सच्चे स्वरुप को समझते है? व्यवहार और निश्चय को जानते हैं ? एकान्ती अथवा हठग्राही संसार के प्रपंचों अथवा मोह में फंसकर नररत्न को संसार समुद्र में तो नही फेंक रहे है?

8. हमारे आचार्य हमे पुकार पुकार कर कह रहे कि संसार के बाहरी पदार्थों में सुख नही, वरन आत्मा में ही अतीन्द्रिय सुख है। उसके लिये कभी अपनी आत्मा का ध्यान कर कर्मों का नाश करने का पुरुषार्थ किया ? तो फिर हम संसार के कार्यों में इतने रचे बसे क्यों हैं ? क्या हम अपनी आत्मा का उद्धार का मार्ग खोज रहे हैं ?

9. आगम में तत्वार्थ सूत्र आदि में बहुत आरम्भ परिग्रह को नरक दुर्गति का कारण कहा है। क्या हम इसे स्वीकार करते है? तो फिर हम परिग्रह को जोडने की होड़ में क्यों लगे है ? कहीं हम धनवान की महिमा तो नही गा रहे हैं ?

10. वर्तमान में जो हमें पूर्व पुण्य से धन बलबुद्धि आदि मिले है। क्या हम उसका कुछ सदुपयोग कर कल्याण के मार्ग में लगा रहे हैं ? तो समझ लीजिए कि हम जिनेन्द्र के भक्त हैं तो जिनेन्द्र भगवान के बताए हुए मार्ग पर चलकर एक दिन अवश्य हम सच्चे सुख की प्राप्त कर सकेगें

अतः दशलक्षण पर्व मे जो अपनी आत्मा का अनुभव करता वही श्रेष्ठ अन्तर आत्मा इन्द्रियों के विषय से विश्व होता है। वही सच्चा मुमुक्षु है उसके ही यह पर्व सार्थक होते हैं।

नोट - गोलालारीय दर्शन पत्रिका के लिए सागर, बीना, बबीना, उज्जैन क्षेत्रों के लिए क्षेत्रीय प्रतिनिधि (महिलाये इच्छुक हो तो सादर आमंत्रित है) जो सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों में रुचि रखते है वे सादर आमंत्रित है। वे 9406744064 पर संपर्क करे।

।। सादर श्रद्धांजली ।।

श्री अरविन्द कामताप्रसाद जैन का देहांत 3 जुलाई को इन्दौर में हो गया। आप बहुत मिलनसार व्यक्ति थे। समाज कार्यों में आप बढ़ चढ़कर भागीदारी निभाते थे।

स्व. श्री अमरचंदजी खंडवावालों के सुपुत्र **श्री अपूर्व जैन** का देहांत 22 अगस्त को हृदयघात के कारण अल्पायु में हो गया। आप काफी शांत स्वभाव के व्यक्ति थे। आपकी धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि थी। आपकी स्मृति में परिजनों ने 21000 रु. की राशि समाज को दान स्वरुप प्रदान की है।

प्रेमचंदजी के बड़े पुत्र **श्री प्रतीक जैन** का आकस्मिक निधन 28 अगस्त को अल्पायु में हो गया है। आप धर्म व समाज कार्यों में रुचि रखते थे। आपकी स्मृति में परिजनों ने 71000 रु. की राशि समाज को दान स्वरुप प्रदान की है।

स्व. श्री कपूरचंदजी के बड़े पुत्र **श्री दिलीप जैन** का देहांत 31 अगस्त को इन्दौर में हो गया है।

श्रीमती शांतीबाई स्व. सुमेरचंदजी जैन का देहांत 28 अगस्त को 90 वर्ष की दीर्घायु में जबलपुर में हो गया। आपका संपूर्ण जीवन धार्मिक कार्यों व स्वाध्याय में बीता। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी महिला थी।

श्री सुमेरचंदजी का देहांत 13 सितम्बर को इन्दौर में हो गया। आप सरल स्वभावी एवं धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि रखते थे। आपकी स्मृति में परिजनों ने 5100 रु. की राशि समाज को दान स्वरुप दी है।

श्रीमती रज्जीबाई धर्मपत्नी स्व. श्री श्यामलालजी का देहांत 23 सितम्बर को इन्दौर में हो गया। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी एवं धार्मिक महिला थी।

गोलालारीय दर्शन परिवार अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

नोट - शोक संदेशों का प्रकाशन जानकारी देने पर निशुल्क किया जाता है।

श्री छोटेलाल जैन के परिवार ने किये मरणोपरांत नेत्र दान

शांतिकुमार जैन, गंजबासौदा। 13 अगस्त 2016 को गंजबासौदा के श्री छोटेलालजी जैन (बाकलवालों) का 80 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया है। आप काफी शान्त स्वभाव के व्यक्तित्व थे उन्होंने काफी समय पहले ही संकल्प ले लिया था कि मृत्यु उपरांत नेत्रदान करना है। ऐसी दुख की घड़ी में उनके परिवार वालों ने उनके संकल्प का मान कर दोनों नेत्रदान करायें।

नगर में जैन समाज का 60% व्यक्ति मृत्युपरान्त नेत्रदान कर चुके है। गंज बासौदा में अभी तक लगभग 25 व्यक्तियों द्वारा नेत्रदान व दो व्यक्ति द्वारा देहदान किया जा चुका है। स्व. श्री छोटेलालजी की पगडी रस्म के समय चेतना समिति के अध्यक्ष श्री कन्छेदी लालजी, डॉ. रोहले सा., राजपूत सा. व शांतिकुमार जैन द्वारा स्व. श्री छोटेलालजी के परिवार का अभिनन्दन किया गया।

अतिथि संपादक की कलम से...

कत्लख़ाना नहीं कारखाना खोलिये

हिन्दू संस्कृति और शाकाहार की पक्षधर सभी को यह ख़बर चौंकाने वाली है कि देश में पंजीकृत बूचड़खानों की संख्या : मिल्क प्रोसेसिंग फैक्ट्रियों और लिक्विड मिल्क प्लांटो की सम्मलित संख्या से 7 गुना ज्यादा है एक आर.टी.आई. के जवाब के अनुसार देश में 1623 पंजीकृत बूचड़खाने (अवैध तो अनगिनत है) जबकि रजिस्टर्ड मिल्क प्रोसेसिंग यूनिटों की संख्या सिर्फ 213 है।

दूध, दही की नदियों के लिये प्रसिद्ध इस देश मे दुधमुंहे बच्चे दूध की दो बूंद को तरसते है, यहां पेट्रोल, डीजल की कीमतों पर तो बहुत हाय तौबा मचता है लेकिन गोधन की कमी से दूध के बढ़ते दामों के बारे में हम चुप ही रहते है।

श्वेत क्रांति (दूध) नहीं यहां गुलाबी क्रांति (मांस) को प्रश्रय मिल रहा है।

जब मुगल इस देश में आये तो उन्होंने भारत की धार्मिक मान्यताओं से जुड़े सभी मिथकों को नष्ट नहीं किया। वे मांसाहारी थे लेकिन गौमांस नहीं खाते थे, बाबर, हुमायूँ, अकबर, औरंगजेब, हैदर अली सभी ने गौहत्या पर प्रतिबंध लगाया था।

गाय की पूजा और पवित्र प्राणी मानने वाले इस देश में अंग्रेजों के आने के बाद गौमांस खाने प्रचलन बढ़ा। सबसे पहला कत्लख़ाना कलकत्ता में रार्बट क्लाइव ने खोला फिर मुम्बई, केरल और तमिलनाडु में खोले गये। अंग्रेजों ने 250 सालों के शासनकाल में 350 कत्लख़ाने खोले। अंग्रेजों ने जहां जहां (आर्मी केन्ट) सैनिक छावनी खोली वहां कत्लख़ाने और वैश्याघर (रेड लाइट एरिया) भी खोले।

सन् 1920 में लंदन की यूनीलीवर की शाखा लीवर ब्रदर्स बहुराष्ट्रीय कंपनी का भारत में पर्दापण हुआ उसने गाय की चर्बी मिश्रित डालडा ब्रांड वनस्पति स्थापित किया। साथ ही क्लोनाल्ड कंपनी ने हैम्बर्गर बनाने का कारखाना स्थापित किया, ये ब्रेकफास्ट फूड नवजात बछड़े के मांस से निर्मित

होता है। भारत के 10 राज्य है जहां गोवंश, भैंस इत्यादि के वध पर कोई प्रतिबंध नहीं है 18 राज्यों में गोहत्या पर पूरी या आंशिक रोक है। महाराष्ट्र में 316, यूपी में 285, आंध्रप्रदेश में 183, तमिलनाडु में 130, कर्नाटका में 36, पंजाब में 91, मध्यप्रदेश में 79, छत्तीसगढ़ में 74, केरल में 55, उड़ीसा में 51 कत्लख़ाने है। देश का सबसे बड़ा कत्लख़ाना देवनार, महाराष्ट्र में है। जब से कत्लख़ाने खुले है तभी से हिन्दू मुस्लिम विवाद शुरु हो गये है, इसके पीछे अग्रेंजों की राजनीति थी, उनकी साजिश थी क्योंकि उन्हें गोमांस खाना था।

सन् 1894 में ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया ने एक पत्र भारत में रह रहे अंग्रेज अफसर के नाम प्रेषित किया कि भारत में जितने भी बूचड़खाने है वह हिन्दूओं को पसंद नहीं है, तो तुम ऐसा करो कि स्लाटर हाउस में उन हिन्दूओं को हटाकर मुसलमानों को भर्ती करो और हिन्दूओं को बताओं की मुसलमान तुम्हारी गाय माता को काट रहे है।

इन कत्लख़ानों में गायों को बड़ी बेदर्दी से मारा जाता है जहां 10 गायों को ले जाने का स्थान है वहां 200 गाय भरी जाती है। 4 से 5 दिन तक भूखा रखा जाता है फिर गाय की आंखे फोड़कर व टांग तोड़कर सिद्ध किया जाता है कि वे काम की नहीं है। फिर 100 डिग्री के तापमान का खोलता पानी गाय पर डालकर उनकी चर्बी उतारते है क्योंकि जिंदा गाय की चर्बी पतली उतरती है जिससे सुंदर बैग, जाकेट, सेंडल बनायी जाती है। लकड़ियां जलाकर उनकी हड्डियों में से चर्बी निकाली जाती है, जिससे हवा पूरी तरह जहरीली हो रही है। बूचड़खानों के आस पास पानी के स्रोतों में मांस के लोथडों को कुत्ते नोंचते है, चील व गिद्ध आसपास उड़ते रहते है। इन बूचड़खानों में दुधारु और गर्भवती पशु भी काटे जा रहे है।

हम देश के जीवदया प्रेमी इन्कम टैक्स, सेल्स टैक्स के माध्यम से करोड़ों रुपये टैक्स सरकार को दे रहे है। परन्तु सरकार हमारे इन्हीं पैसों से कत्लख़ाने खोलने वालों के लिए सब्सिडि के रुप में हमारे टैक्स का पैसा दे रही है जबकि गौशाला खोलने के लिए संस्थाओं या व्यक्तिगत सब्सिडी का कोई प्रावधान अभी तक नहीं है, ऐसा क्यो ? हमें इस पर विचार कर विरोध करना होगा।

भारत छोड़ने से पहले माउन्टवेटन ने 1946 के दिसम्बर में गांधीजी से भेंट कर पूछा अब तो आप लोगों का राज रहेगा, आप सबसे पहला काम क्या करेंगे, गांधीजी ने कहा - ''सबसे पहले मैं कत्लख़ाने बंद कराऊंगा''। भारत की आजादी हम बाद में ले लेंगे, लेकिन गत सरकारों ने लगातार बूचड़खाने खोले और मांस निर्यात किया। उन्हीं गांधीजी को पूजने वाली म.प्र. सरकार बूचड़खाने के लिए जगह ढूंढ़ रही है जहां लगभग 1200 पशु प्रतिदिन काटे जाने का प्रस्ताव है।

हम सबको एक स्वर में कहना होगा कि हमें कत्लख़ाना नहीं कारखाना चाहिये। हमारे पैसों से आप - 1) पशु चिकित्सालय खोलिये 2) अच्छी नस्ल के सांड पालिये जिससे प्राकृतिक गर्भाधान हो। 3) गौशाला खुलवाइये। 4) दूध डेयरी खोलिये जिनसे दूध की कमी ना हो। 5) ट्रेनिंग सेंटर खोलिये। 6) गौ एम्बुलेंस चलवाईये। 7) गोबर गैस प्लांट लगाकर मिथेन गैस का उपयोग कराईये।

परन्तु अब हम भारत से गौमांस का निर्यात नहीं करने देंगे। निर्यात करना ही है तो, दया-प्रेम-करुणा का करो। हम टैक्स जीवदया के लिये देते है कत्लख़ानों के लिए नहीं। हमें मांस निर्यात कर उस पैसे से भारत का तथाकथित विकास नहीं चाहिये। - **श्रीमती साधना जैन,** आकाशवाणी, भोपाल

भौतिकता को छोड़...

एकता से दीवार और दीवार की एकता से घर व महल बनते है वैसे ही हमें एक होना होगा तभी समाज सशक्त होगा।

आयोजन में प्रदेश के राजस्व मंत्री श्री जयंत मलैयाजी की धर्मपत्नी श्रीमती सुधा मलैया, निगम सभापति श्री अजय नरुका व चातुर्मास समिति के प्रमुख संयोजक श्री सचिन जैन व पार्षद श्रीमती आशा सोनी के साथ समाज के वरिष्ठ सदस्य उपस्थित थे। रैली बहुत ही अनुशासित तरह से निकली।

गोलालारीय समाज की क्षमावाणी प्रतिवर्षानुसार न्यास भवन पर हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। सर्वप्रथम मंगलचरण कर तत्पश्चात 5 से अधिक तप साधना करने वाले श्रावको का सम्मान किया गया तदुपरांत प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का सम्मान समारोह कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रहा। इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रतिवर्ष अपनी अपनी कक्षाओं में श्रेष्ठ रहे बच्चों को समाज की ओर से पुरस्कृत किया जाता है। गोलालारीय दर्शन की ओर से सभी को प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गए एवं गोलालारीय समाज न्यास की ओर से प्रथम, द्वितीय एवं सांत्वना पुरस्कार दिए गए। इस कड़ी में कक्षा 12 वीं में गणित संकाय से उदित जैन(एम.पी.बोर्ड), अनिमेष जैन(सी बी एस ई) और वाणिज्य संकाय से काजल जैन को प्रथम पुरस्कार दिए गए। कक्षा 10 वीं में सीबीएसई बोर्ड से 10 सीजीपीए प्राप्त करने वाले बच्चों में अमीषा जैन, अर्पिता जैन एवं संस्कार जैन को प्रथम, संचिता जैन को द्वितीय एवं सुहानी जैन को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम का संचालन श्रीमति अनुपमा जैन ने किया।

सचिव बाहुबली ने समाज के गतवर्ष व आगामी कार्यक्रमों का विवरण दिया समाज का आगामी स्नेह सम्मेलन दिसम्बर-जनवरी 2017 में होना प्रस्तावित है जिसमें बुजुर्ग सम्मान, प्रतिभाशाली सम्मान व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का समावेश किया जावेगा। ब्र. अभय भैयाजी नें अपनें संक्षिप्त उद्बोधन में क्षमा धर्म का महत्व समझाते हुए कहा कि गलती होनें पर तत्काल ही क्षमा याचना कर लेना चाहिए परंतु बात बंद नही करना चाहिए। बात बंद करने से सुलह के सभी रास्ते बंद होते है। लॉर्ड आदिनाथ कालोनी में कुम्हेडी में समाज द्वारा नवीन मंदिर का निर्माण किया जाना है। जिसके निर्माण हेतु समाज जनों ने बढचढकर सहयोग देने की घोषणा की। मंदिरजी का बाहरी नक्शा (ऐलीवेशन) समाज जनों को दिखाया गया। प्रतिभाशाली बच्चों का सम्मान श्री खेमचंदजी की स्मृति में उनकी पुत्री विजया-अजय जैन, ललितपुर द्वारा प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री सुधेश जैन ने किया व आभार वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अशोक कुमारजी जैन ने माना।

पयूर्षण पर्व में बही धर्मगंगा

पुणे में चैत्यालय का स्थान परिवर्तन एवं पयूर्षण पर्व संपन्न

प्रकाशचंद जैन, पुणे । देश की जानी मानी आईटी नगर की मगरपट्टा सिटी में लगभग 10 जैन परिवार रहते है जिन्हें जिनदर्शन के लिए लगभग 6-7 किलोमीटर दूर जाना पड़ता था । प्रतिदिन जिन दर्शन हो सके इस उद्देश्य के साथ यहां एक किराये का फ्लैट लेकर उसमें जिन चैत्यालय कुछ वर्ष पूर्व प्रारंभ किया गया था । यहां आसपास के लगभग 50 परिवार नित्य दर्शन हेतु आने लगे । फ्लैट में स्थानाभाव के कारण अन्य गतिविधियों का संचालन नहीं हो पा रहा था । चैत्यालय से जुड़े हर सदस्य की यही भावना था कि इस कार्य हेतु बड़ा फ्लैट मिल जाए जहां समस्त धार्मिक आयोजन भी सुचारु रुप से संचालित हो सके निरंतर प्रयास पश्चात डिफोडिल मल्टी में 2 बीएचके का फ्लैट खरीदकर पयूर्षण पर्व के 2 दिन पूर्व 4 सितम्बर को पूर्ण विधि विधान से चैत्यालय स्थानांतरित किया गया ।

नवीन चैत्यालय में प्रथम प्रवेश का सौभाग्य सागर निवासी डॉ. प्रकाशंचद जैन परिवार (श्रीमती कुसुम, श्री अतुल, श्रीमती रुचि व आर्जव, ऋद्धि) को प्राप्त हुआ । नवीन चैत्यालय में पयूर्षण पर्व 100 से अधिक परिवारों ने हर्षोल्लासपूर्वक पर्व मनाया । क्षमावाणी के अवसर पर जंक फूड में सामिष पदार्थों पर तत्कालीन संवाद का आयोजन कर समाजजनों से जंक फूड छोड़ने का आह्वान किया गया । भक्ति गीत, नृत्य नाटिका व अन्य सांस्कृतिक आयोजन हुए तत्पश्चात मंदिर हेतु फ्लैट क्रय करने में सक्रिय भूमिका निभाने वाले अर्पण अशोक जैन, निर्मलकुमार जैन व डॉ. प्रकाशचंद व अन्य सदस्यों का सम्मान किया गया । कार्यक्रम का निर्देशन, चैत्यालय हेतु अर्थ प्रबंधन करने वाली प्रसिद्ध लेखिका एवं विदेशों में जैन सिद्धांतों का वैज्ञानिक चिंतन प्रस्तुत करने वाली डॉ. नीलम जैन ने किया । समाज के सभी सदस्यों ने खड़े होकर करतल ध्वनि के साथ डॉ. नीलम जैन का आभार मान, सम्मान किया ।

गंज बासौदा

शांतिकुमार जैन, गंज बासौदा । नगर में पूज्य मुनि श्री 108 कुन्थुसागरजी महाराज एवं 105 क्षुल्लक हर्षित सागरजी महाराज के चातुर्मास सान्निध्य में प्रतिदिन नित्य पूजन, मुनिश्री के सारगर्भित प्रवचन तत्पश्चात आहारचर्या, दोपहर 3 बजे से क्लास भी मुनि श्री द्वारा ली जाती है ।

महावीर बिहार में प्रतिदिन अभिषेक, शांतिधारा पश्चात पूजन आदि का कार्यक्रम सामूहिक रूप से सम्पन्न होता था । प्रतिदिन मुनि कुन्थुसागरजी महाराज के दस धर्मो पर प्रवचन हुये । पयूर्षण पर्व पर मुनि श्री के सान्निध्य में ही श्रावक शिविर का भी आयोजन किया गया । जिसमें 36 श्रावकों द्वारा दसों दिन के लिए घर परिवार त्याग कर ब्रह्मचारी अवस्था में रहकर तप साधना व प्रभु की आराधना की । प्रतिदिन शाम को क्षुल्लक हर्षित सागरजी के दस धर्मो पर आगम अनुसार प्रवचन हुये तत्पश्चात प्रभु की संगीतमय आरती में समाजजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

मुनि श्री का सान्निध्य मिलने पर मैना सुन्दरी नाटिका का मंचन किया गया । नाटक के समस्त पात्र जैन समाज के स्थानीय कलाकारों द्वारा निभाये गये । नाटक देखने के लिए प्रतिदिन भारी संख्या में समाजजन महावीर बिहार पहुँचते थे । क्षमावाणी पर्व में श्रावक शिविर में भाग लेने वाले श्रावकों व 5 या उससे अधिक उपवास करने वाले श्रावकों का सम्मान किया गया ।

पयूर्षण पर्व पश्चात प्रति वर्षानुसार छठ को विमानोत्सव मनाया गया । चल समारोह दोपहर 12 बजे महावीर बिहार से प्रमुख मार्गों से होता हुआ निकला, मार्ग में सभी प्रमुख सामाजिक संगठनों द्वारा श्री जी की आरती उतारी गई । चल समारोह विद्याधामपुरम (बूढा पुरा जैन मंदिर) पहुंचने पर श्रीजी का अभिषेक-शांतिधारा सम्पन्न करायी गयी व मुनि श्री कुन्थुसागर जी के प्रवचनों का लाभ भी जैन समाज को प्राप्त हुआ । अंत में सकल जैन समाज की क्षमावाणी का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । जिसमें उपस्थित समाजजनों ने एकदूसरे से क्षमायाचना की । श्री जी की संगीतमय आरती की गई । उज्जैन के भाई फिरोज खान आर्केस्ट्रा पार्टी द्वारा रात्रि में जैन भजनों का रंगारंग कार्यक्रम किया गया ।

छतरपुर

सनत जैन, छतरपुर । जैन धर्मावलम्बियों के 10 दिवसीय पयूर्षण पर्व के समापन पर्व पर प्रतिवर्ष निकलने वाली श्रीजी की पालकी (शोभायात्रा) नगर में पहली बार 24 पालकियों के साथ धूमधाम एवं भव्यता के साथ निकाली गयी । छतरपुर में मुनिश्री के सान्निध्य में पहली बार पालकी निकाली गयी जो आकर्षण का केन्द्र रही । शोभायात्रा में परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के परम शिष्य मुनिश्री पवित्र सागर, मुनिश्री प्रयोग सागर, मुनिश्री पुष्पदंत सागर के कुशल मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद के साथ शोभायात्रा प्रारंभ हुई । श्री नेमीनाथ जिनालय बड़ा मंदिर से प्रारंभ होकर महल रोड़, प्रताप नगर तालाब होती हुई अतिशय क्षेत्र डेरा पहाड़ी जैन मंदिर पहुंची जहां श्रीजी का मंगल अभिषेक धार्मिक विधि विधान के साथ किया गया।

इस अवसर पर छतरपुर शहर में उत्कृष्ट सेवायें देने के लिए जैन समाज छतरपुर द्वारा डीआईजी केसी जैन, परिवार न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश श्री आदर्शकुमार जैन, एसडीएम छतरपुर श्री डीपी द्विवेदी, नेत्र विशेषज्ञ डॉ. खुराना का शाल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह् भेंटकर सम्मानित किया गया । डेरा पहाड़ी पर मुनिश्री का आर्शीवचन प्राप्त हुआ । दोपहर 1 बजे श्रीजी की पालकी (शोभायात्रा) अतिशय क्षेत्र डेरा पहाड़ी जैन मंदिर से बाबूराम चतुर्वेदी स्टेडियम, छत्रसाल चौराहा, महल तिराहा होते हुए पुन: नेमीनाथ जिनालय बड़ा मंदिर पहुंचकर संपन्न हुई। श्रीजी की पालकी के भ्रमण के दौरान श्रद्धालुओं ने अपने अपने घर के सामने श्रीजी की आरती की । शोभायात्रा में समाज के स्त्री, पुरुष, युवा बच्चे भजन गाते एवं श्रीजी की जयकारों के साथ अहिंसा एवं जियो और जीने दो की उद्घोषणा करते हुए चल रहे थे । शोभायात्रा मे पुरुष धोती, दुपट्टा, सफेद कुर्ते पजामे एवं महिलायें पीली एवं लाल साड़ी पहने एक व्यवस्थित कतार में चलते आकर्षक लग रहे थे । इस अवसर पर 10वीं और 12वीं के प्रतिभाशाली 30 विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री आदर्शकुमार जैन ने कहा कि 30 प्रतिभाओं में से 20 बेटियां होना यह दर्शाता है कि जैन समाज में बेटियों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है । अरविंद बड़कुल अध्यक्ष अजितनाथ जिनालय, सनत जैन पत्रकार, बब्बू जैन, मोहित जैन, जयकुमार जैन, जितेन्द्र जैन, प्रदीप चौधरी, देवराज जैन, केसी जैन, प्रो. पीके जैन, प्रो. सुमतिप्रकाश जैन, देवेन्द्र जैन, इंजीनियर प्रदीप जैन ने पयूर्षण पर्व एवं पालकी महोत्सव मे सहयोग देने वाली सभी बंधुओं के प्रति आभार प्रकट किया है ।

बबीना

विनोद बैरागी, बबीना । नगर में पयूर्षण पर्व उत्साहपूर्वक मनाये गये । नित्य नियम पूजन पश्चात प्रवचन व संध्या को आरती, प्रवचन व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बच्चों, महिलाओं और पुरुषों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया । क्षमावाणी पर्व पर समाजजनों ने गतवर्ष में हुयी समस्त भूलों के लिए एक दूसरे से क्षमायाचना की । समाज के वरिष्ठजनों की उपिस्थति ने कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की । बैरागीजी ने बताया कि परम पूज्य 108 श्री सरलसागरजी महाराज द्वारा लिखित पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है जिसमें गुरु का महत्व बताया गया है । गुरु ही हमें मार्ग बताते है, माता पिता जन्म देते है पर गुरु जीवन देते है, सन्मार्ग बताते है, अंधकार रुपी मिथ्यात्व मिटाते है । ज्ञान रुपी दीपक जलाकर सम्यक मार्ग दिखाते है । गुरु ही खेवनहार है, जनम मरण मिटाते है । गुरु की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता । वे पत्थर को भगवान व आत्मा को परमात्मा से मिलाने का मार्ग प्रशस्त करते है । सच्चे गुरु के शरण में जो आता है उसे सबकुछ मिल जाता है । बिछड़ जाने पर इन संतो से नरक जैसा लगता है, पास में आकर तो देखो समवशरण सा लगता है ।

उज्जैन

शैलेन्द्र जैन, उज्जैन । फ्रीगंज स्थित दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर में गुजरात के कलाकारों द्वारा पयूर्षण पर्व में घी से भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा का निर्माण किया गया । धूपदशमी के दिन दोपहर से समाजजन प्रतिमा के दर्शन कर पुण्यलाभ लेने लगे । दिगम्बर जैन समाज द्वारा पयूर्षण के दौरान दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर में गुजरात से आई कलाकार हंसाबेन एवं उनके साथ आए सूरसिंह, शांताबेन एवं राकेश भाई ने संयुक्त रुप से भगवान पार्श्वनाथ की चार फीट उंची आकर्षक एवं मनमोहक प्रतिमा का निर्माण किया, जिसे मंदिरजी में सजाकर रखा गया था। प्रतिमा निर्माण में 74 किलो घी, 20 किलो नारियल की रस्सी व सुतली एवं लकड़ी का उपयोग किया गया। देश भर में कई प्रतिमाओं को बनाने वाली अहमदाबाद से आई राष्ट्रीय कलाकार हंसाबेन ने चर्चा करते हुए बताया कि उन्होंने अपनी टीम के साथ अभी तक कई स्थानों पर जाकर कांच, फाइबर, सीमेंट आदि के द्वारा प्रतिमाओं का निर्माण किया है ।

क्षमा आत्मा का स्वभाव है

पुष्पेन्द्र जैन, बाकल । क्षमा आत्मा का स्वभाव है अनादिकालीन कर्म सलुसता से यह मनुष्य की सर्वोच्च शिखर पर्याय भव पीड़ा के बीच निरंतर कष्ट प्राप्त कर रही है। यदि हमने अपनी क्षमा स्वाभावी आत्मा का एक भी बार साक्षात्कार कर लिया होता तो यह अनादिकानील परिभ्रमण का चक्कर समाप्त होकर हम शुद्ध स्वभाव को प्राप्त कर लेते । जीवन की निरंतरता में हमारे द्वारा व्यवहार एवं व्यवसाय में समझने एवं समझाने में रिश्तों को निभाने में हुई गलतियों के लिये उपस्थित सभी से क्षमा याचना की । उक्ताशय के विचार श्री दिगम्बर जैन समाज एवं श्री तारण तरण जैन समाज के संयुक्त तत्वाधान में पर्वाधिराज पर्यूषण के समापन पर उपस्थित समाज बंधुओं ने व्यक्त किये । कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रातः अभिषेक पूजन आरती तथा दोपहर में 1008 भगवान आदिनाथ जी तथा माँ जिनवाणी जी की भव्यशोभा यात्रा भव्यता एवं उल्लास के साथ बडी संख्या में धार्मिक लोगों की उपस्थिति में निकाली गई । इस अवसर पर बाजार प्रांगण में द्वार रंगोली डालकर श्रृध्दाभाव के साथ पूजन आरती एवं वंदना की गई । शोभायात्रा समारोह में जैन नवयुवक मण्डल की महिलाओं द्वारा भक्तिगीतों के साथ डांड़िया की मनमोहक प्रस्तुति दी गई ।

ढोल नगाड़ों एवं भक्ति गीतों के मध्य उत्साह के साथ नगर में भगवान आदिनाथ जी की तथा मॉ जिनवाणी की शोभा यात्रा को देखकर समाज के वयोवृद्ध ब्रम्हचारी पं. धन्यकुमार जैन, सिंघई सुरेशचंद जैन, दादा खुशालचंद पन्ना लाल जैन,प्रेमचंद जैन, संजय सिंघई श्रीमति अभिलाषा जैन, अजय अहिंसा ने बताया कि हमारे जीवन में पहली बार ऐसा अवसर आया है। जब नगर में भगवान की तथा माँ जिनवाणी की शोभायात्रा एक साथ निकाली गई । युवाओं द्वारा किये गये प्रयास की सराहना भी की । भव्यता के साथ सानंद सम्पन्न हुये इस अविस्मरणीय आयोजन में दिगम्बर जैन समाज अध्यक्ष जीवनधर मोदी, श्री तारण तरण जैन समाज अध्यक्ष .पुष्प कुमार जैन, नरेन्द्र सिंघई, पवन मोदी, पुष्पेन्द्र मोदी आदि की उपस्थित रही । भव्य समारोह में स्थानीय एवं क्षेत्रीय जनों की भी बड़ी संख्या में उपस्थिति रही ।

चंदेरी

चंदेरी, चक्रेश जैन । विंध्याचल पर्वत श्रेणियों के मध्य बसी चंदेरी में विश्व विख्यात चौबीसी खंदारगिरी एवं पारसनाथ पुराना मंदिर एवं नया मंदिर पर भक्तों ने हर्ष उल्लासपूर्वक दशलक्षण पर्व मनाया । नित्य नियम पूजा विधान आरती के कार्यक्रम पूर्ण विधि विधान से दसों दिन भक्ति भाव पूर्ण संपन्न हुये एवं चौदस के दिन पूर्ण भक्ति भाव सहित दशलक्षण पर्व के समापन के अवसर पर भव्य जुलूस का आयोजन किया गया जिसमें समाज के सभी महिला पुरुष एवं बच्चों ने उल्लासपूर्वक सम्मिलित होकर जुलूस की शोभा को बढ़ाया । अंत में जुलूस महावीर धर्मशाला पहुंचा, वहां पर आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी की परम प्रभावक शिष्या आर्यिका प्रशांतमति माताजी ने एक विशाल धर्मसभा को संबोधित किया, जिसमें दस दिन में उपवास करने वाले भक्तों को माताजी ने आशीर्वाद दिया । सभी उपवास करने वाले भक्तों ने आशीर्वाद लेने से पहले माताजी को श्रीफल अर्पित किये इसके पश्चात माताजी ने उपवास के महत्व को बताया तदुपरांत पारसनाथ मंदिर एवं चौबीसी मंदिर से श्रीजी को लाकर अभिषेक किया गया एवं सभी धर्मप्रेमीजनों ने श्रीजी के अभिषेक को देखकर धर्मलाभ लिया ।

अगले दिन क्षमावाणी का कार्यक्रम हुआ जहां समाजजनों ने सभी से विगत वर्षों में हुये ज्ञात अज्ञात गलतियों के लिए क्षमायाचना की।

हमारी सदैव यही भावना है कि हम श्रीजी, आचार्यश्री व मुनिराजजी के फोटो प्रकाशित न करे ताकि हमारे इस माध्यम से हमारे पूज्यों की किसी भी तरह की अवमानना न हो, यदि इस प्रयास में कोई त्रुटि रह जाती है तो हम आपसे क्षमाप्रार्थी है ।

रक्षाबंधन पर्व पर बेटियों व उनके माता-पिता सम्मानित

विशाल जैन, पवा। वीर बुन्देलखण्ड की पावन भूमि पर स्थित सिद्ध क्षेत्र पावागिरि जी में राष्ट्रसंत आचार्य प्रवर विद्यासागरजी महाराज के मंगलमय आशीर्वाद एवं वात्सल्य मूर्ति आध्यात्मिक संत मुनि श्री सुव्रत सागर जी महाराज के पावन सानिध्य में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया गया । चातुर्मास की बेला में मुनि श्री के पावन वर्षायोग हेतु मंगल कलश की स्थापना के बाद वीर शासन जयन्ती धूमधाम से मनायी गयी । मुनि श्री सुव्रत सागरजी महाराज ने कहा कि सच्चा भक्त संकटों से कभी दूर नही भागता, हम मुर्दा नही जिन्दा है तो संकटों से भागना कैसा? डरकर कभी मरना नही क्योंकि भगवान की भक्ति में वह शक्ति है जिससे संकट स्वत: दूर भाग जाते हैं । कस्बे के वासुपूज्य दिगम्बर जैन मंदिर में श्रावण मास शुक्ल पक्ष के पखवाडे में 16 दिवसीय शांतिनाथ महामंडल विधान सम्पन्न हुआ । रक्षाबन्धन के अवसर पर सिद्ध क्षेत्र पावागिरिजी में 'बेटी बचाओ एवं बेटी पढ़ाओं' कार्यक्रम में ऐसे **66 माता-पिता को सम्मानित किया गया जिनकी केवल एक या एक से अधिक बेटियां है** । इस अवसर पर श्रेयांशनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया गया एवं मुनिश्री सुव्रत सागरजी महाराज द्वारा रचित रक्षाबंधन विधान में विष्णु कुमार एवं अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनिराजों को अर्घ समर्पित किये ।

'बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम के अंतर्गत वक्ताओं ने कहा कि बेटी सृष्टि का मूल आधार है । दुनिया का आस्तित्व बेटी पर टिका है, बेटी है तो कल है बिना बेटी के समाज की कल्पना करना व्यर्थ है । बेटियाँ बोझ नही सहारा होती है, बेटा-बेटी के भेदभाव को दूर करना हमारा परम कर्तव्य है। बेटी मकान को घर बनाती है दो कुलों का मान बढ़ाती है। बेटी के आगमन पर भाग्य के दरवाजे खुलते है उसके बाद भी सीता और चन्दन बाला की धरती कन्याओं से सूनी होती जा रही है । यह सबसे बडी बिडम्बना है कि माँ, बहिन-बहू तो दुनिया में सभी चाहते लेकिन बेटी नही । वक्ताओं ने कहा कि भ्रूण हत्या जघन्य अपराध व महापाप हैं । सामाजिक कलंक एवं कानून में दण्डनीय है, जिसे जड से उखाड फेंकना हमारा दायित्व हैं । दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों का अंत करना एवं बेटी को शिक्षित, धार्मिक एवं संस्कारित बनाना हमारा ध्येय होना चाहिए । महिला उत्पीडन रोकने एवं उनके अधिकारो की सुरक्षा के लिए न्यायोचित कदम उठाना समाज की प्राथमिकता हो । 'हम दो हमारे दो' या 'हम दो हमारा एक' की भावना बहुत बड़ी विकृति एवं समाज के लिए अभिशाप है यदि गृहस्थ जीवन में कदम रखा है तो कम से कम तीन बच्चें होना चाहिए एवं उन्हें भारतीय संस्कृति एवं जैन दर्शन के अनुसार संस्कारित करना चाहिए । अंत में मुनिश्री सुव्रत सागर जी महाराज ने ब्राहमी-सुन्दरी चारित्र पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बेटियों को सम्मानित करनें की परम्परा प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ ने प्रारंभ की थी ।

मुनि श्री ने कहा कि यदि बेटी संस्कारित हो गयी तो कभी हमारा परिवार बिगड नहीं सकता है, सभी कहते हैं बेटी है तो कल है लेकिन गोदी में बेटी कोई नहीं चाहता डोली में बेटी सभी चाहते हैं । बेटी की सुरक्षा के बिना धर्म भी सुरक्षित नही है । उन्होनें बेटियों को पढने, संस्कारित रहने एवं धर्म के मार्ग पर चलने का संदेश देते हुए बेटी बचाओ- जल बचाओ का आह्वान किया । दशलक्षण महापर्व में मुनि श्री द्वारा रचित श्री 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया एवं 9 सितम्बर को पुष्पदन्तनाथ स्वामी, 15 सितम्बर को वासुपूज्य स्वामी का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया गया । तथा क्षमावाणी पर्व पर सभी ने गतवर्ष में हुई भूलों के लिए एक दूसरे से क्षमा माँगी, वार्षिक कलशाभिषेक एवं फूलमाला का आयोजन किया गया । इस अवसर पर मुनि श्री ने कहा कि छः माह से अधिक द्वेषभाव रखने से सम्यक्त्व नष्ट हो जाता है अतः वर्ष में तीन बार दशलक्षण पर्व होते है उनमें हमें क्षमाभाव धारणकर सभी से द्वेष एवं बैरभाव को दूर कर देना चाहिए । उन्होनें कहा जिद, हिंसा, अहंकार, भय, निन्दा, बैर, ईर्ष्या और उपेक्षा क्रोध के संबंधी है जो हमारे जीवन को पतन की ओर ले जाते है, अतः क्रोध को जीतकर हमें क्षमा भाव धारण करना है। पावागिरी के वार्षिक मेला से पूर्व अष्टान्हिका महापर्व में 25 मण्डलीय श्री 1008 सिद्ध चक्र महामण्डल विधान के आयोजन की घोषणा की गयी, कस्बे के पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में पर्यूषण पर्व पर धार्मिक अनुष्ठानों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम रही । जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी एवं विराट प्रश्न मंच का आयोजन किया गया । दशलक्षण पर्व के समापन पर नगर में श्रीजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी जिसमें वीर सेवादल तालबेहट एवं जैन मिलन की महिला एवं वासुपूज्य शाखा का सक्रिय सहयोग रहा एवं रात्रि में क्षमावाणी महापर्व मनाया गया । भजन प्रतियोगिता व फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में सभी बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर पुरस्कार जीते । चौधरी राजीव कुमार, अनिल जैन, प्रकाशचंद्र कुड़ावनी, शैलेष कुमार, संजय मोदी, जितेन्द्र बड़ौरा, विशाल पवा ने निर्णायक की भूमिका निभायी । संचालन पूर्व पार्षद चौधरी चक्रेश जैन ने किया ।

आपके परिवार में संपन्न मांगलिक अवसर जैसे कि 25वीं या 50वीं विवाह वर्षगांठ या बच्चों के विवाह का शुभ अवसर हो या जन्मदिवस की सुहानी यादें इनका विज्ञापन 'गोलालारीय दर्शन' पत्रिका में प्रकाशित कर इस सुखद एहसास को समाजजनों के साथ सांझा कर सकते है । ऐसे अवसरों पर हम लाखों रुपये खर्च कर देते है, हमारा आपसे सादर अनुरोध है कि अपने समाज की एकमात्र पत्रिका में मांगलिक प्रसंगों का विज्ञापन प्रदान कर गोलालारीय दर्शन को आर्थिक संबल कर पत्रिका के नियमित प्रकाशन में अद्वितीय सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी छोटी सी सहायता राशि हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है।

मैत्री समूह का राष्ट्रीय यंग जैना अवार्ड इन्दौर में

राजेन्द्र जैन, इन्दौर । शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट योग्यता प्राप्त करने वाले जैन छात्र छात्राओं के सम्मान के लिए पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद एवं पूज्य मुनिश्री क्षमासागरजी महाराज की प्रेरणा से राष्ट्रीय स्तर का यंग जैना अवार्ड इस बार 8 एवं 9 अक्टूबर को इन्दौर के प्रसिद्ध जैन तीर्थक्षेत्र गोम्मटगिरी में आयोजित किया जायेगा । इस गरिमापूर्ण सम्मान समारोह की शुरुआत मुनिश्री क्षमासागरजी की प्रेरणा से सन् 2001 में शिवपुरी में हुई थी । मैत्री समूह एवं यंग जैना अवार्ड से देश के अनेक शहरों में भी सक्रिय सदस्य जुड़े हैं एवं आयोजन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । छतरपुर के श्री देवराज जैन एवं श्री प्रदीप चौधरी आयोजन की मूलभूत व्यवस्थाएँ संभालते आ रहे हैं तो डॉ. सुमतिप्रकाश जैन एवं श्री राजेश बड़कुल 2001 से राष्ट्रीय यंग जैना अवार्ड समारोह का संचालन करने का गौरव प्राप्त करते आ रहे हैं ।

मैत्री समूह की डॉ. निशा जैन भोपाल के अनुसार 8 अक्टूबर को देश के विभिन्न भागों से आई चयनित प्रतिभाओं का पंजीयन किया जायेगा । इसके बाद विभिन्न सत्रों में प्रतिभाओं के लिए करियर काउसलिंग तथा व्यक्तित्व विकास पर केन्द्रित विषय विशेषज्ञों के सारगर्भित व्याख्यान आयोजित होंगे । दूसरे दिन 9 अक्टूबर को विविध आयोजनों के बाद दोपहर 2 बजे से सायं 5 बजे तक प्रतिभाओं के सम्मान का मुख्य समारोह संपन्न होगा । तीसरे दिन 10 अक्टूबर को सभी सम्मानित प्रतिभाओं को भोपाल में चातुर्मासरत पूज्य आचार्य 108 श्री विद्यासागरजी महाराज के दर्शनार्थ ले जाया जायेगा । इस आयोजन में देश भर से प्रतिभाओं की 30 अगस्त 16 तक मिली प्रविष्टियों में से उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली कोई 200 चयनित एवं सम्मान समारोह में स्वयं उपस्थित हुई प्रतिभाओं का आत्मीय एवं गरिमापूर्व सम्मान किया जायेगा । इन में 100 विद्यार्थी ऐसे हैं जिन्होंने अपनी बोर्ड क्लास में शत प्रतिशत अंक पाए हैं । ज्ञात हो कि 2001 से अब तक यंग जैना अवार्ड में लगभग 11000 से अधिक जैन छात्र छात्राओं को सम्मानित किया जा चुका है ।

यंग जैना अवार्ड में सन् 2016 में दसवी कक्षा में 85%, 12वीं कक्षा में साइंस में 80% एवं आर्ट्स व कामर्स में 75% या इससे अधिक अंक पाने वाले मेघावी प्रतिभाओं का सम्मान किया जायेगा । गौरतलब है कि बिना किसी शासकीय सहायता के जैन समुदाय द्वारा देशभर की जैन प्रतिभाओं का सम्मान समारोह अत्यंत प्रबंधकीय कौशल व अनुशासन के साथ आयोजित होता है ।

क्षमावाणी पर्व धूमधाम से संपन्न

जबलपुर

जबलपुर, अरविन्द जैन । श्री दिगम्बर गोलालारीय जैन नवयुवक सभा के तत्वावधान में श्री राजकुमार जैन एस.बी.आई. के मुख्य आतिथ्य वीरेन्द्र जैन की अध्यक्षता एवं श्री निर्मलकुमार जैन ज्योत्साचार्य के विशिष्ट आतिथ्य में एन.आर. साहिबा मंगल भवन उखरी रोड़ जबलपुर में क्षमावाणी कार्यक्रम आयोजित किया गया । सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा द्वीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया । मंगलाचरण श्रीमती रानी जैन, पिंकी जैन, रिया एवं रितिका जैन द्वारा किया गया । मुख्य अतिथि का स्वागत अध्यक्ष अरविन्द जैन बाकल, महासचिव डॉ. सुनील जैन द्वारा किया गया । कार्यक्रम अध्यक्ष एवं विशिष्ट अतिथि का स्वागत संस्था के कोषाध्यक्ष श्री आलोक जैन एवं संस्था उपाध्यक्ष श्री अश्विन जैन एवं श्री अशोक जैन 'बाकल' तथा इंजी. सनत जैन द्वारा किया गया । तदुपरांत बच्चों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम नृत्य, भजन, गायन की प्रस्तुति दी गई । इसके बाद प्रश्न मंच श्रीमती निधि जैन, (सुनील तारबाबू) द्वारा कराया गया तथा पुरस्कार वितरण श्रीमती चैनाबाई 'तारबाबू' द्वारा किया गया । कार्यक्रम सुबह नाश्ते के साथ प्रारंभ हुआ अंत में मोक्ष पहेली कार्यक्रम का संचालन संस्था अध्यक्ष एवं कोषाध्यक्ष द्वारा किया गया और उसका पुरस्कार वितरण श्री अश्विन जैन एवं श्रीमती उषा जैन द्वारा किया गया । उसके उपरांत द्वितीय चरण में 12वीं, 10वीं और 8 वीं में 80% से अधिक अंक लाने वाले बालक बालिकाओं को अतिथियों द्वारा पुरस्कार वितरित किये गये । दर्शकों द्वारा करतल ध्वनि से बच्चों का मान बढ़ाया गया । अंत में सभी के द्वारा सामूहिक क्षमा एक दूसरे से मांगी गई एवं भोजन ग्रहण किया गया । कार्यक्रम का संचालन श्री अमित जैन द्वारा किया गया । अंत में कार्यक्रम का समापन डॉ. सुनील जैन महासचिव के आभार प्रदर्शन के साथ समाप्ति की घोषणा की गई ।

विदिशा

अरविंद जैन, विदिशा । नगर में स्थित 14 जिनालयों एवं 1008 श्री पार्श्वनाथ जिनालय अरिहंत बिहार कालोनी में पर्वाधिराज पर्यूषण दसलक्षण धर्म आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के सुयोग्य शिष्य 108 श्री स्वभाव सागरजी महाराज एवं 105 ऐलक श्री देवानंदजी महाराज के सानिध्य में सानंद मनाया गया मुनि श्री स्वाभाव सागरजी महाराज द्वारा प्रत्येक धर्म के बारे में प्रतिदिन विस्तार से समझाया गया तत्पश्चात तत्वार्थसूत्र की वाचना की गई नगर के सभी जिनालयों में साज संगीत के साथ पूजा अर्चना विधान सम्पन्न किये गये व रात्रि के समय आरती, भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन किये गये जिसमें सभी साधर्मी भाई एवं बहिनों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई इस अवसर पर सांगानेर से पधारे पण्डितजी के प्रवचन सुबह-शाम जैन बडा मंदिर किले अंदर सम्पन्न हुये । अनंत चर्तुदशी को किले अंदर से एक जल यात्रा निकाली गई व पुन: वहीं आकर श्रीजी का कलशाभिषेक किया गया । दिनांक 17.09.2016 को किले अंदर छोटा मंदिर से क्षमावाणी जूलूस निकाला गया माधवगंज विदिशा श्री जी के अभिषेक किये गये एवं सामूहिक क्षमावाणी का आदान-प्रदान किया गया, जूलूस वापिस किले अंदर में सम्पन्न हुआ । इसी श्रृंखला में दिनांक 25.09.2016 को आचार्य श्री के आर्शीवाद से शीतलधाम में निर्मित हो रहे समवशरण मंदिर में सामूहिक क्षमावाणी कार्यक्रम का आयोजन किया गया । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप मे श्री मुनव्वर सलीम, राज्य सभा सदस्य एवं श्री तोरन सिंह दांगी, अध्यक्ष जिला पंचायत विदिशा उपस्थित थे । अतिथिद्वय द्वारा विदिशा में आचार्य श्री के आशीर्वाद से निर्मित हो रही गौशाला आर्थिक सहयोग दिया गया ।

अहमदाबाद

संजीव जैन, अहमदाबाद । पयूर्षण पर्व में नगर के सभी मंदिरो में आनंदपूर्वक मनाया गया । स्थानीय मंदिरों में समाजजनों ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये । नित्य नियम पूजन पाठ के पश्चात प्रवचन माला का आयोजन, संध्या आरती तत्पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सभी सदस्यों ने बढ़ चढ़कर सहभागिता निभायी । गोलालारीय समाज के सदस्यों ने मंदिरों में अपनी महती भूमिका निभाते हुये जिम्मेदारियों का पूर्ण रुप से निर्वहन किया । गोलालारीय समाज की सामूहिक क्षमावाणी व तपसाधना करने वाले श्रावकों व मेघावी विद्यार्थीयों का सम्मान 25 सितम्बर को रखा गया । सम्मान समारोह में समाजजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । सर्वप्रथम मंगलाचरण का वाचन कु. श्वेता, कु. आयुषी, कु. स्वाति ने किया । 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के चित्र का अनावरण कार्यक्रम अध्यक्ष श्री जिनेन्द्रकुमार जैन के साथ श्री दिलीप एच. जैन, श्री अरविंद कपूरचंद, श्री प्रेमचंद रामदयाल, श्री प्रवीणकुमार जिनेन्द्रकुमार, श्री मनोजकुमार, श्री जयकुमार, श्री मुकेश, श्री जिनेन्द्र शिखरचंद, श्री सुनील अयोध्याप्रसाद, श्री राजेन्द्रकुमार, श्री कैलाशचंद, श्री बलदेवप्रसाद, श्री जैकी राजेशकुमार व श्री आर.के. जैन द्वारा किया गया । तत्पश्चात दीप प्रज्जवलन श्री जिनेन्द्रकुमार, श्री शैलेषकुमार, श्री राजेन्द्र भजनलाल, श्री सुखनंदन, श्री योगेश कुंदनलाल, श्री राकेशकुमार, श्री मुकेश शीलचंद जैन द्वारा किया गया । पांच व पांच से अधिक तपसाधना करने वाले श्रावकों का सम्मान किया गया जिसकी सभा में उपस्थित समाजजनों ने करतल ध्वनि से अनुमोदना की । कक्षा 10 वी और 12वीं के मेघावी विद्यार्थियों का रजत मेडल प्रदान कर सम्मान किया गया । अंकसूचियों का संकलन आर.के. जैन द्वारा किया गया । संपूर्ण कार्यक्रम का संयोजन व संचालन श्री संजीव जैन ने किया । इस भव्य कार्यक्रम में समाज की युवा शक्ति श्री निलेशकुमार, श्री देवांगकुमार, श्री योगेशकुमार, श्री निलेशकुमार, श्री सुनीलकुमार, श्री सूरजकुमार, श्री दिनेशकुमार, श्री सजनकुमार, श्री संजीवकुमार, श्री सुनीलकुमार, श्री नितेशकुमार, श्री निशांतकुमार एवं श्री सुधीरकुमार जैन का विशेष योगदान रहा ।

32 तप साधना करने वाली श्रीमती विमलाबेन ज्ञानचंद जैन की समाजजनों ने भूरि भूरि प्रंशसा की । 10 उपवास करने वाले सर्वश्री तनुजजी, राहुलजी, सौरभजी, सुप्रियाजी, देवेशजी, श्रीमती मोनाजी, शिवमजी, सुश्री रिटा, निशांकजी, श्रीमती कविताजी, श्रीमती रुचिताजी, श्रीमती आरतीजी, आशीषकुमार, सुश्री सुहानी, सुश्री मेघा, श्रीमती सोनलजी, अभयकुमारजी, चिरागजी, श्रीमती राखीजी, लक्की, श्रीमती स्वातीजी, श्रीमती रानी, श्रीमती लक्ष्मीबेन, अक्षयकुमारजी, श्रीमती कुसुमलताजी, श्रीमती विद्याबेन, श्रीमती अनिताजी, चेतनजी, दीपूजी, श्रीमती सुमनबेनजी, श्रीमती भावनाजी, श्रीमती नीतूजी, सुश्री दीप्तिजी, स्वदेशजी, सुश्री शैफाली, सुश्री नैन्सी, सुश्री दयाबेन, श्रीमती सुष्माजी, श्रीमती सलोनीजी, अभयकुमारजी, श्रीमती सरोजबेन, श्रीमती इन्द्राबेन, सुश्री स्वरुपाबेन, सुश्री नम्रता, सुश्री मोनिकाबेन, सुश्री दीपिकाबेन, मनीषकुमारजी, श्रीमती सरिताबेन, श्रीमती रानी, सुश्री आयुषी, 8 उपवास करने वाले श्री समर्थजी व 5 उपवास करने वाले श्री साहिलजी, रितुजी, श्रीमती पूजाजी, सुश्री सोनल, सुश्री रुतबी, सुश्री श्रुति, श्रीमती देव्यानी, सुश्री शशि, अर्हमेन्द्रजी, सुश्री सुरभी, सुश्री शैली, विनोदकुमारजी, सुश्री सोनिया, श्रीमती सपनाजी, सुश्री दिप्ती, सुश्री श्वेता, विकासजी, मितेशजी, संदीपजी एवं श्रीमती मयूरजी ने किये ।

दशलक्षण महापर्व आनंद पूर्वक संपन्न हुए

संजय जैन, मुंबई। श्री चन्द्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर कल्याण, (महाराष्ट्र) में पर्युषण महापर्व बहुत ही आनंदमय तरीके से सम्पन्न हुए जिसमे कल्याण दिगंबर जैन समाज ने बहुत ही बढ चढ कर हिस्सा लिया। इंदौर से पधारे पंडित श्री पारस शास्त्री जी ने ज्ञान की गंगा बहाई, पूजा के साथ साथ सुबह तत्वार्थसूत्र पर प्रवचन बडी सरल भाषा में दिए और उसे हिंदी में अर्थपूर्वक समझाया। प्रतिदिन शाम को भजन, आरती के साथ दशलक्षण धर्म पर प्रवचन दिए जिसको सभी लोगों ने बहुत ही सराहा, उसके बाद पाठशाला के बच्चों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गए जिसका आनंद भी समस्त जैन समाज के लोगों ने उठाया। अंतिम दिन सुबह पूजा, अभिषेक और फिर दशलक्षण विधान हुआ एवं शाम को चार बजे पुनः श्रीजी का अभिषेक और पूजा आदि की गई। रात्रि में भजन संध्या का आयोजन रखा गया जिसमें समाजजनों ने बहुत ही बढ़ चढकर भाग लिया। भजन संध्या का संचालन श्री संजय जैन द्वारा किया गया। भजन गायक श्री सुनील जैन के साथी काका, पिंटू एवं विवेक सिंघई, विजय कसालीवाल, अभय जैन और लोकेन्द्र जैन जी ने बहुत ही सुमधुर भजन गाये। अंतिम दिन श्री चन्द्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर के ट्रस्ट मंडल द्वारा पं. श्री पारसजी एवं श्री अंकितजी के साथ साथ उन सभी लोगों का अभिवादन और स्वागत किया गया, जिन्होंने पयूर्षण पर्व पर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा तपसाधना आदि की आराधना की। अंत में मंडल के अध्यक्ष श्री विजय कासालीवाल ने पंडित जी के साथ जैन समाज का आभार व्यक्त किया। साथ ही एक दूसरे से क्षमाचायना कर क्षमावाणी मनाई।

चातुर्मासी दोहे

- प्रदीप जैन
(टीवी फिल्म निर्माता)
दिल्ली

स्वाध्याय साधु करें औ दें श्रावक उपदेश,
चातुर्मास के स्थापन का यह भी काज विशेष।

चातुर्मास के चार माह में चतुर बढ़ायें ज्ञान,
धर्म नाम आंडबर रचते जड़ से जो अज्ञान।

स्व-पर से आसक्ति छूटे ये चातुर्मास सिखाये,
भीड़ भीड़ पर भीड़ जुटाना आसक्ति कहलाये।

बड़े बड़े नित आयोजन भी अपव्यय कहलायें,
चातुर्मास की शुद्ध भावना इसमें व्यय हो जायें।

ललितपुर का क्षमावाणी कार्यक्रम सम्पन्न

राकेश कुमार जैन (डब्ल्यू), ललितपुर। श्री दि.जैन गोलालारीय समाज का क्षमावाणी कार्यक्रम 25 सितम्बर को संपन्न हुआ जिसकी अध्यक्षता संस्था अध्यक्ष श्री मुन्नालालजी एडवोकेट ने की, मुख्य अतिथियों के रुप में वरिष्ठ समाज श्रेष्ठी व समिति संरक्षकगण उपस्थित रहे सेठ प्रसन्न कुमार नौहरकलां ने भगवान आदिनाथ के चित्र का अनावरण किया तथा दीप प्रज्जवलन अजय कुमार साइकिल ने किया। उपस्थित जन समूह ने वीर वंदना का पाठ किया। मंत्री श्री अनिल नरियल ने पिछली सभा की कार्यवाही को पढकर सुनाया, वर्ष 2015-16 में संस्था ने मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति तथा विधवा व असहाय महिलाओं को पेंशन हेतु दान राशि देने वाले दानदतारो का सम्मान किया। कई समाज श्रेष्ठीयों ने 2016-17 हेतु दान देने की घोषणा की गई। संस्था कोषाध्यक्ष कुलदीप नौहरकलां ने वर्ष 2015-16 का आय व्यय विवरण सभा के समक्ष रखा। सभा को संबोधित करते हुये सर्वश्री शीलचंद दिगौडा, रमेश राख, ज्ञानेन्द्र जैन, अरविंद जमादार, अशोक एसबीआई, अरविंद बरौदा, अजय साइकिल, डॉ. हुकुमचंद पवैया व प्राचार्य अजय जैन ने क्षमा के महत्व पर प्रकाश डालने के साथ संस्था का मार्गदर्शन भी किया। संस्था अध्यक्ष ने सभी संस्था पदाधिकारियों व सदस्यों की ओर से क्षमा याचना की। अंत में कार्यक्रम संयोजक रविन्द्र मोदी ने सभी का आभार व्यक्त करते हुये सभी महानुभावों से जलपान गृहण करने का निवेदन किया। कार्यक्रम का संचालन आडीटर राकेश (डब्लू) द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्था के वरिष्ठ उपाध्यक्ष रविन्द्र मोदी, कनिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील गुंदेरा, आडीटर अंकित एड., उपमंत्री धर्मेश्वर जमोरिया, कोषाध्यक्ष कुलदीप नौहरकलां, कार्यालय मंत्री कमल बडेरा, सदस्यगण मुकेश नौहरकलां, मनीषा राख, अभिषेक एडवोकेट, संजय पवैया, देवेन्द्र विरधा, सुनील कैलवारा, अभिषेक बिलौवा तथा हिमांशु देवरान के साथ काशीराम बिलौआ, सतेन्द्र छोटे साकेत चुनमुन सुरेन्द्र देवरान, राजेन्द्र कैलवारा, विजय देवरान, कमल नौहरकला, मनोज सिलगन, वरुण नयाखेडा, शैलेषजी, पिन्टू, गौरव देवरान की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

धर्मात्माओं का मिलन है मेला : आर्यिका विविक्त श्री

प्रवीण जैन, झांसी। सुप्राचीन जैन तीर्थ करगुवां जी का वार्षिक मेला एवं कलशाभिषेक समारोह महिला संत आर्यिका विविक्त श्री माताजी के ससंघ सानिध्य में विशाल जनसमूह के बीच उल्लास से सम्पन्न हुआ। आर्यिका मां ने खचाखच भरे पण्डाल में श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि जीवन में धर्म सबसे बडा मित्र है जो धर्मात्माओं में बसता है और जहां धर्मात्मा मिलते है तो मेला सहज है। साधुजन मिले तो संगति अवश्य करिए। क्योंकि उनके पास आत्मा उत्थान के सूत्र होते है जिन्हें पाकर इहलोक और परलोक दोनो सुखी हो सकते है। दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप द्वारा विभिन्न स्टालो से सुसज्जित आनन्द मेला का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. पीके. जैन ने किया। उन्होनें मेले में होने वाली आय को शिक्षा में लगाए जाने की प्रशंसा की।

विशिष्ट अतिथि पंचायत महामंत्री प्रवीण कुमार जैन उपाध्यक्ष रविन्द्र जैन, करगुवां मंत्री सुभाष जैन सि. ऋषभ जैन आदि का स्वागत सोशल ग्रुप के अध्यक्ष विनय जैन, आलोक जैन, अमीष जैन, अखिल जैन, डॉ. संदीप जैन, आशीष जैन आदि ने किया।

भगवान का कलशाभिषेक इंजी. आकाश जैन, डॉ. सागर जैन, इंजी. अरूण जैन, रवि जैन आदि ने किया 64 महिलाओं ने भगवान के समक्ष चँवर झुलाए। आर्यिका विशुव्रता, क्षुल्लिका सरलमति, क्षुल्लिका विक्रया मंचासीन रही।

सम्यक दर्शन, ज्ञान, चारित्र एवं पर्यूषण पर्व माल का सौभाग्य कैलाशचंद्र जैन, इंजी. के.सी. जैन, राजीव जैन अंहिसा, सुमत कुमार जैन सीए को प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर ध्वजारोहण पूर्व मंत्री प्रदीप जैन आदित्य, इंजी. वीरेन्द्र जैन ने किया। पूर्व केन्द्रीय मंत्री के मुख्य अतिथि में यूनाईटेड जैन लायर्स एसोसिएशन के निःशुल्क विधि परामर्श केन्द्र का उद्घाटन किया गया। एडवोकेट रजनी जैन, पवन जैन, आमोद जैन, शिरोमणि जैन, पंकज जैन, आदि उपस्थित रहे। वार्षिक मेला समारोह की अध्यक्षता प्रकाशचंद्र जैन एड. ने संचालन पंचायत महामंत्री प्रवीण कुमार जैन ने एवं आभार ज्ञापन करगुवां तीर्थ मंत्री सुभाष जैन ने किया। भारी संख्या में भक्तजन उपस्थित रहे।

दसलक्षण पर्व सानन्द सम्पन्न

राजेश जैन, झांसी। जैन महापर्व 6 सितम्बर से 15 सितम्बर तक उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन, ब्रह्मचर्य दसलक्षण धर्म के साथ सानन्द सम्पन्न हुए।

इन दस दिनो में झांसी शहर के समस्त 12 मंदिरों एवं करगुवांजी तीर्थ एवं करुणा स्थली पर नित्य अभिषेक संगीतमय पूजन विधान के अलावा रात्रि में आरती के साथ साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

दिगम्बर जैन पंचायती बडा मंदिरजी में सांगानेर से पधारे ब्र. भइया श्री प्रशान्त कुमार जैन एवं झांसी शहर में चातुर्मास कर रही आचार्य विरागसागर महाराजजी की सुयोग्य शिष्या 105 आर्यिका विविक्त श्री माताजी (संसघ) के द्वारा दस दिनों तक ज्ञान एवं धर्म संस्कार की गंगा बहती रही। 17 सितम्बर विश्व मैत्री क्षमा दिवस (वाणी) समारोह दीनदयाल सभागार में सर्वधर्म एकता के संदेश के साथ मनाया गया।

इस पावन पर्व पर आर्यिका विविक्त श्री माताजी ने अपने प्रवचन में कहा कि अपकार का बदला उपकार से, क्रोध का बदला क्षमा से दो। यदि कोई इतना साहस कर सके तो उसके हृदय में आनन्द का झरना स्वयं ही बह उठेगा।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डी.आई.जी. शरद सचान ने कहा कि अपराधी से बदला लेने की भावना से समस्या बढती है। जरुरी यह है कि उसे अपराध मुक्त जीवन की शिक्षा मिल सके। उन्होंने क्षमाधर्म को भारतीय संस्कृति व सभी धर्मों का मूल तत्व बताया। महापौर किरण शर्मा, सर्वधर्म सदभाव समिति के अध्यक्ष कैलाशचंद जैन, नरोत्तम स्वामी एड. डॉ. फादर सदानन्द, गुरजीत सिंह चावला, हरगोविन्द कुशवाहा, जैन समाज के अध्यक्ष प्रकाशचंद जैन एडवोकेट, गोकुलचंद जैन एडवोकेट, शैलेन्द्र जैन, ललित जैन, डॉ. जिनेन्द जैन, डॉ. नीलम जैन ने क्षमा धर्म पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री प्रवीण कुमार जैन ने एवं आभार ऋषभ जैन ने व्यक्त किया।

''गोलालारीय दर्शन'' द्वारा हर वर्ष देश भर में फैले गोलालारीय समाज के मेधावी बच्चों को उनकी प्रतिभा के आधार पर प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है, इस वर्ष 9.10.16 रविवार को करुणा स्थली झांसी पर आयोजित एक कार्यक्रम में इस वर्ष के मेधावी बच्चों को सम्मानित किया जायेगा।

आवरण से आचरण तक

आजकल मंदिरों और धार्मिक स्थानों में व्यक्तिगत शिष्टाचार के सम्बन्ध मे एक नई जागरुकता देखी जा रही है । यह शिष्टाचार विशेष रूप से आदर्श ड्रेस कोड को लेकर है। मंदिरों में प्रवेश करते समय आपका पहनावा कैसा हो, यह नया विषय नही है। लंबे समय से यह एक वाद विवाद का बिन्दु रहा है, विशेष रूप से महिलाओं के वस्त्र पुरूषों से ज्यादा महिलाओं में बहस का मुद्दा रहा हैं । पहले महिलाएँ मुख्यतः साडी पहनती थीं, तब साडी कैसे पहनी जाये यह अहम होता था । सीधे पल्ले की हो या उल्टे पल्ले की मुँह ढंका जाये या सिर, सिर कितना ढंका जाये आदि अनेक अवधारणाएं विवाद का विषय हुआ करती थीं । धीरे धीरे सलवार सूट का प्रवेश हुआ तो उस पर भी विवाद शुरू हो गए, पर समय के साथ लोगों ने उसे शालीन वेशभूषा के रूप में स्वीकार कर लिया और आज के समय के सबसे आरामदायक, सुविधाजनक पहनावे के रूप में यह घर घर में प्रचलित हो गया है। लेकिन वर्तमान पीढ़ी का आधुनिक पहनावा जीन्स टॉप, टीशर्ट आदि है । यह पीढ़ी इस पहनावे को सबसे आरामदायक महसूस करती है, इसलिये आज हर युवक युवती की यह पहली पसंद बन गया है। समय के साथ हमारी आवश्यकता भी बदली है। आज जीवन पहले की तरह स्लो नही, बहुत फास्ट हो गया है। पहले व्यक्ति धोती कुरता पहनकर पैदल या बैलगाडी पर आसानी से जाकर या अपनी दुकान पर गाव तकिया लगाकर आराम से बैठा रहता था । महिलायें भी साड़ी पहनकर घर के काम काज करती रहती थीं। पर आज समय और लोगों का लाइफ स्टाइल दोनों बदल गए हैं । आज की भाग दौड़ भरी जिंदगी में पहले के ये पहनावे सुविधाजनक नहीं है । आज अलग अलग

तरह के जॉब्स में ड्रेस कोड भी उन्ही के अनुसार आवश्यक हो गए है, ऐसे में हम किसी पर भी किसी विशेष ड्रेस पहनने, न पहनने की जोर जबरदस्ती कैसे कर सकते हैं ।

जहाँ तक मंदिर में किसी विशेष पहनावे को लेकर निर्देशित किया जाये, तो बुरा नही कहा जा सकता। इस बारे में कोई विवाद नही है कि मंदिर में पहनने वाले वस्त्र शालीन हो, गरिमामय हो, अभद्र और अश्लील न हो । और यह नियम पुरुष और महिलाओं दोनों पर समान रूप से लागू होना चाहिये । वस्त्रों की शालीनता पहनने वाले के तौर तरीके पर भी निर्भर करती है। अनेक महिलाऐं साड़ी जैसे शालीन पहनावे को व अनेक पुरुष मंदिर की धोती भी अभद्र तरीके से पहन लेते हैं । मंदिर में क्या पहन कर आया जाये और क्या नही इस नियम का पालन सामान्य स्थिति में तो किया जा सकता है । वास्तव में मंदिर जाने का संकल्प करना सबसे आवश्यक नियम माना जाता है । आदर्श स्थिति में व्यक्ति संकल्प लेकर मंदिर जाता है तो उसकी तैयारी भी वैसे ही होती है वो सही वेशभूषा धारण कर सही तरीके से द्रव्यादि लेकर मंदिर जाता है । किंतु वर्तमान समय में ऐसें लोगों की संख्या कम होती जा रही है । अधिकतर काम काजी पुरुष, महिलाऐं और युवतियां अपनी व्यस्त दिनचर्या में सुबह जल्दी जल्दी काम पर निकलते समय थोडा समय देव दर्शन कर जाना चाहते है। बड़े शहरों में तो यह और भी कठिनाई भरा है । आजकल अनेक संस्थानों के अपने विशेष ड्रेस कोड होते हैं जिसे पहन कर जाना मजबूरी है । ऐसे में किसी विशेष ड्रेस कोड का हवाला देकर उन्हें मंदिर में आने से रोकना कहाँ तक न्याय संगत होगा । कई बार तथाकथित जिम्मेदार लोग बच्चों को इतनी कठोरता से फटकारते है कि इससे हमारी कामकाजी पीढ़ी जो देव दर्शन की थोड़ी बहुत भावना रखती है, मंदिर आने से ही कतराने लगेगी । हमारी पहली प्राथमिकता युवा पीढी को मंदिर लाने की होना चाहिए जो कि मंदिरों से दूर होती जा रही है । आज हमारे मंदिरों में उपस्थित श्रद्धालुओं में कितने युवा होते है, सोचने का विषय है और वो किन परिस्थितियों में मंदिर आये हैं, जानना जरूरी है । वस्त्रों को लेकर हमारी कट्टरता कहीं इन मुट्ठी भर युवाओं को भी मंदिर से दूर न कर दे । सबसे पहली जरूरत बच्चों में मंदिर आने का भाव जगाना है । जब बचपन से ही बच्चे मंदिर आने का महत्व समझेंगे तो स्वतः ही यह शिष्टाचार भी उनमें आ जायेगा कि मंदिर की वेशभूषा कैसी हो । वस्त्रों के इस शिष्टाचार के साथ ही बच्चों और युवाओं में सबसे जरूरी है मंदिर में और बाहर उनके आचरण की शुद्धि का । वास्तव में हम आज अपने बच्चों को आगे बढने, तरक्की करने, उत्तम सफलता प्राप्त करने के लिए जितना प्रेरित करते है, क्या उन्हें उत्तम आचरण सीखने की प्रेरणा दे पा रहे हैं । अपने जॉब, कार्य क्षेत्र में निष्ठा, ईमानदारी से काम करना, कमीशन, रिश्वत से दूर रहना, सच्चाई का साथ देना, महिलाओ का सम्मान करना आदि गुणों की सीख देना आज के माता पिताओं की नजर में गैर जरूरी हो गया है । आज हम ऊपरी आवरण पर जितना हो हल्ला मचा रहे है उतना भीतरी शुद्धता के लिए भी करें तो हमारे अनेकानेक दाग धुल जाएँ । हमारा जैन धर्म आंतरिक शुचिता के लिए जाना जाता है किंतु आज हर अच्छे बुरे कर्मो में जैन बंधुओं का कहीं न कही लिप्त होना न केवल धर्म के मूल सिद्धांतो पर वरन पूरे जैन समाज पर धब्बा है। इसके पीछे कहीं न कही हमारी अपनी चारित्रिक दुर्बलता है। आज हममे से कितने लोग अपने बच्चों को इस तरह के सद्गुणों का परिचय कराते है या प्राथमिकता देते हैं । बच्चों को नवकार की शिक्षा के साथ चारित्रिक विकास की भी सीख दी जानी चाहिए ताकि वे न केवल सच्चरित्र बन कर परिवार और समाज का नाम ऊंचा करें साथ ही साथ देश के सुयोग्य नागरिक भी बनें ।

शब्द जाल प्रतियोगिता–14

शब्द जाल प्रतियोगिता 14 में कुछ खेलों के नाम छिपे है । जिन्हें आपको दस खेलों के नाम ढूँढ़ना है । उदाहरण – BOXING

C	L	M	K	A	B	A	D	D	I	N	O	B
O	K	H	O	L	C	D	M	N	P	R	A	L
B	A	H	O	C	K	E	Y	P	O	D	L	M
O	B	B	F	N	C	K	I	N	M	S	T	Q
X	J	L	K	O	P	R	N	I	L	R	P	S
I	L	T	P	P	O	K	N	M	S	T	D	C
N	K	P	E	S	N	T	P	L	M	M	N	K
G	C	L	M	N	O	K	B	G	H	C	L	S
K	H	P	T	N	N	M	G	A	K	Y	M	N
P	E	R	C	K	B	I	H	S	L	C	T	R
R	S	T	R	K	C	L	S	T	M	L	S	T
M	S	W	I	M	M	I	N	G	K	I	P	Y
P	R	L	C	D	D	K	K	L	M	N	N	P
N	M	M	K	J	F	R	R	T	S	G	L	M
L	D	N	E	T	R	N	S	P	R	T	Q	P
N	S	C	T	L	S	M	M	L	T	N	R	S

प्रविष्टि निम्नलिखित पते पर भेजें – **'गोलालारीय दर्शन' 16, महारानी रोड, इन्दौर या 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर** । प्राप्त सही प्रविष्टियों का ड्रा निकालकर प्रथम 5 विजेताओं को के नाम निकालकर आगामी अंक में उनके फोटो भी प्रकाशित किये जायेंगे। * **नियम** – प्रतियोगिता सभी आयु वर्ग महिला / पुरुष / बच्चों के लिए है। प्रविष्टि भेजने की **अंतिम तिथि 15 नवम्बर 2016** सही जवाब के साथ प्रतियोगी परिवार प्रमुख का नाम, टेलीफोन नंबर एवं प्रत्याशी का नवीन फोटो लगाकर पूर्ण पता मय पिनकोड के साथ अवश्य भेजें। संपादक मंडल का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा। अपूर्ण जानकारी होने पर प्रविष्टी को निरस्त किया जा सकता है ।

सोशल मीडिया से...

एक पाँच छै साल का मासूम सा बच्चा अपनी छोटी बहन को लेकर मंदिर के एक तरफ कोने में बैठा, हाथ जोड़कर भगवान से न जाने क्या मांग रहा था । कपड़े में मैल लगा हुआ था मगर निहायत साफ, उसके नन्हे नन्हे गाल आंसूओं से भीग चुके थे । बहुत लोग उसकी तरफ आकर्षित थे और वह बिल्कुल अनजान अपने भगवान से बातों में लगा हुआ था । जैसे ही वह उठा एक अजनबी ने बढ़कर उसका नन्हा सा हाथ पकड़ा और पूछा – 'क्या मांगा भगवान से' । उसने कहा – 'मेरे पापा मर गये है, उनके लिए स्वर्ग, मेरी माँ रोती रहती है उनके लिए सब्र, मेरी बहन माँ से कपड़े सामान मांगती है उसके लिए पैसे'। 'तुम स्कूल जाते हो' अजनबी का सवाल स्वाभाविक सा सवाल था । 'हाँ जाता हूँ' उसने कहा । 'किस क्लास में पढ़ते हो' ? अजनबी ने पूछा । 'नहीं अंकल पढ़ने नहीं जाता, मां चने बना देती है वह स्कूल के बच्चे को बेचता हूँ, बहुत सारे बच्चे मुझसे चने खरीदते हैं, हमारा यही धंधा है' बच्चे का एक एक शब्द मेरी रुह में उतर रहा था । 'तुम्हारा कोई रिश्तेदार' न चाहते हुए भी अजनबी बच्चे से पूछ बैठा । 'पता नहीं', माँ कहती है गरीब का कोई रिश्तेदार नहीं होता, माँ झूठ नहीं बोलती, पर अंकल, मुझे लगता है मेरी माँ कभी कभी झूठ बोलती है, जब हम खाना खाते हैं हमें देखती रहती है, जब कहता हूँ माँ तुम भी खाओ, तो कहती है मैंने खा लिया था, उस समय लगता है झूठ बोलती है'। 'बेटा अगर तुम्हारे घर का खर्च मिल जाये तो पढ़ाई करोगे?' 'बिल्कुल नहीं' 'क्यों' 'पढ़ाई करने वाले गरीबों से नफरत करते है अंकल'। हमें किसी पढ़े हुए ने कभी नहीं पूछा – पास से गुजर जाते हैं, अजनबी हैरान भी था और शर्मिन्दा भी। फिर उसने कहा – 'हर दिन इसी मंदिर में आता हूँ, कभी किसी ने नहीं पूछा – यहां सब आने वाले मेरे पिताजी को जानते थे – मगर हमें कोई नहीं जानता । ''बच्चा जोर जोर से रोने लगा' अंकल जब बाप मर जाता है तो सब अजनबी क्यों हो जाते हैं?'' मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं था और ना ही मेरे पास बच्चे के सवाल का जवाब है । ऐसे कितने मासूम होंगे जो हसरतों से घायल हैं । बस एक कोशिश कीजिये और अपने आसपास ऐसे जरुरतमंद व्यक्तियों, बेसहाराओं को ढूंढ़ियें और उनकी मदद कीजिये.... मंदिर में सीमेंट या अन्न की बोरी देने से पहले अपने आस पास किसी गरीब को दखे लेना शायद उनको आटे की बोरी की ज्यादा जरुरत हो ।

कुछ समय के लिए गरीब बेसहारा की आंख में आंख डालकर देखे आपको क्या महसूस होता है । 'स्वयं में व समाज में बदलाव लाने का प्रयास जारी रखें।'

क्षमा वीरस्य भूषणम्

क्षमावाणी का दिन पयूर्षण पर्व के कलशारोहण का दिन है । मंदिर कितना भी सुंदर बना हो उस मंदिर का शिखर भी कितना ही सुंदर बना हो पर उसमे कलश न लगे तो वह सुंदर नही दिखता । उसकी सुंदरता के अभाव में उसकी महत्ता कम हो जाती है । उसी प्रकार हम इस जीवन में व्रत, नियम, उपवास, संयम,स्वाध्याय सभी का पालन करें पर मन में क्षमा करने व मांगने का भाव उत्पन्न नहीं हुआ तो जीवन में धारण किये हुए व्रतों का महत्व व सुंदरता कम हो जाती है । क्षमा के अभाव में जीवन अधूरा हैं ।

लेकर क्षमा सिंधु का पानी क्रोधकचि घोलो ।
आओ इस पावन पर्व में गांठ हृदय की खोलो ।

यह क्षमावाणी पर्व आत्म शुद्धि का पर्व है । जैन धर्म में इस पर्व की ऐसी ही महिमा है । इसकी नींव भी क्षमा धर्म से रखी गई, और इसका कलशारोहण भी क्षमावाणी से किया गया है । यानि कि जहां क्षमा करना और क्षमा मांगना दोनो कार्य हो जावें, वही से मुक्ति के मार्ग का उद्घाटन होता है ।दस दिनों में मन कुछ हल्का होता है,मन की मलीनता घटती है तभी हम क्षमा मांगने को एकत्रित होते हैं ।

संसार में शायद ही कोई ऐसा इंसान हो जिसने कभी कोई गलती न की हो । गलती करना मनुष्य का स्वभाव है। न चाहते हुए भी कोई न कोई गलती अवश्य हो जाती है । गलती का होना दुर्भाग्य नही है, गलती स्वीकार न करना दुर्भाग्य है । गलती करने के बाद उसे छुपाना मूर्खता है । अपनी गलती पर लीपा पोती करके उसे सही ठहराना अपराध है । गलती मानकर उसे सुधारना व भविष्य में सुधरना यह महानता है। वही क्षमा है, यह वीरों का आभूषण है ।

जो गलती न करे उसे भगवान कहते हैं ।
जो गलती कर गुजरता है उसे इंसान कहते है।।
जो गलती करके न माने उसे हैवान कहते हैं ।
जो गलती पर करे गलती उसे शैतान कहते है ।।

आदमी की सबसे बड़ी कमजोरी है कि वह अपनी गलती को गलती माननें में अपना अपमान समझता है और कदाचित वही गलती दूसरे से हो जावे तो नमक मिर्च लगाकर उसका उपहास करते है । यही भाव तो बैर, वैमनस्य, द्वंद, ईर्ष्या बढ़ाने में कारण होता है। एक गलती की चिंगारी महाविनाश का कारण बन जाती है । यदि जीवन में किसी बात को लेकर मन मुटाव हो, मतभेद हो, परिवार में, समाज में विघटन हो, कोर्ट कचहरी की नींव डले, धन की बर्बादी हो उसके पूर्व क्षमावाणी को स्वीकार कर लेना । मत सोचना कि लोग मुझे डरपोक कहेंगे । ऐसा व्यर्थ का सोच ही तपन का द्वार खटखटाता है ।

जिसके जीवन में कषायों का तूफान उठ रहा है, कषायों की आग जल रही है, उसके जीवन में क्षमा प्रगट नही हो सकती है । क्षमावाणी का पर्व सौहार्द, सौजन्यता, सद्भावना का पर्व है । जाने अनजाने में हुये अपराध व गलती के प्रति पश्चाताप का भाव रखते हुये मनोमालिन्य दूर करने की भावना इस पर्व का प्रयोजन है। चिरकालीन कषाय रुपी फोडे के ऑपरेशन का दिन है, आपरेशन कर लेना । किसी के मन में कही भी फोडा हो उसके राग–द्वेष की मवाद को निकाल देना चाहिये।

मनुष्य जन्म बैर बांधने के लिये नही मिला है । बैर दूर करने के लिये मिला है ।

यह बैर महादुख दाई है, यह बैर न बैर मिटाता है ।
यह बैर निरंतर प्राणी को व्याकुल कर भटकाता है ।

ऋण को थोड़ा, घाव को छोटा, आग को तनिक, कषाय को अल्प मानकर निश्चित होकर नही बैठ जाना चाहिये । क्योकि ये थोड़ा–थोड़ा बढ़कर बहुत हो जाते है।

फोडे को भी कम मत समझना । फुंसी है तो मवाद बाहर निकाल दें । अन्यथा छोटी सी फुंसी भी नासूर बन जाती है।

जबतक कटु व्यवहार की स्मृति मन में बनी रहेगी तब तक प्रेम की धारा बहना असंभव है । आजकल लोग क्षमा भी उनसे मांगते है जिनसे लड़ाई नही है। मित्रों से मांगते हैं । अरे भाई क्षमा मांगना हो तो उस भाई से मांगो जिससे वर्षो से आपकी बोलचाल नही हैं ।

कषायों से संस्कारित हमारा चित्त होगा तो तब तक धर्म नही होगा ।

अनजाने में बिन चाहे भी भूल हो सकती है।
जीवन के क्रूर पलों में बुद्धि हमारी सो सकती है।।
ऐसे कुछ अनजान पलों की क्षमा नम्र भाव से मांगते हैं ।
क्षमा पर्व पर क्षमा दान दें कलुष हृदय का साफ करें ।।

– राजेन्द्र कुमार जैन 'सायकल वाले', प्रबंध संपादक

विवाह योग्य युवक युवती परिचय विशेषांक दिसम्बर 2016 में

गतवर्ष सिद्धक्षेत्र पवाजी मेले में गोलालारीय दर्शन की प्रथम विवाह योग्य परिचय पुस्तिका 'प्रयास' का विमोचन किया गया था । हमारा यह प्रयास काफी सराहनीय रहा । इस वर्ष भी विभिन्न नगरों से इस पुस्तिका के प्रकाशन की जानकारी चाही गयी । गोलालारीय दर्शन के माध्यम से हमारा सदैव यही प्रयास रहा है कि समाजजनों को सामाजिक व अन्य जानकारियां सहज ही उपलब्ध करा सके । हमनें इस माध्यम को कभी भी आय का साधन नहीं माना है । गत 7 वर्षों से गोलालारीय दर्शन पत्रिका निरंतर वित्तीय घाटे सहन करने के पश्चात भी पत्रिका के 5–6 अंक प्रतिवर्ष 4200 परिवार को निरंतर प्रेषित किये जा रहे है । यहां खेदपूर्वक कहना पड़ता है कि इन 4200 परिवारों में से मात्र 62 परिवारों ने ही 2000 रुपये से अधिक की राशि का सहयोग देकर सदस्य बने है जबकि आप सभी जानते है कि आज हमारे समाज में एक से बढ़कर एक धनाढ्य लोग है जो मांगलिक एवं धार्मिक कार्यों में लाखों रुपये खर्च कर देते है । आपको कभी भी महसूस हो कि गोलालारीय दर्शन समाज के लिए उपयोगी है तो आर्थिक सहयोग प्रदान कर हमारा संबल अवश्य बढ़ाये । हमें सदैव आपके सहयोग का इंतजार रहेगा । जहां धर्म के लिए लाखों रुपये दे रहे है वहां पर अपनी समाज की एक अच्छे प्रयास के लिए हजारों रुपये देकर आर्थिक संबल प्रदान करेंगे तो आने वाली पीढ़ियां सदैव आपको सदैव याद करेगी । हम समाज के समस्त परिवारो को फिर भी निरंतर अंक भेजने का प्रयास करते रहेंगे । गोलालारीय दर्शन के विवाह योग्य युवक युवती के प्रथम अंक **'प्रयास'** की उपलब्धियों को ध्यान में रख यह निर्णय लिया है कि प्रयास पुस्तिका एक वर्ष छोड़कर प्रकाशित किया जावेगी ताकि समाजजनों को नवीन प्रत्याशियों की जानकारी उपलब्ध हो सके । **इसी तारतम्य में वर्ष दिसम्बर 2016 का अंक हमारा विवाह योग्य युवक युवती परिचय विशेषांक होगा, जिसका प्रारुप अंतिम पेज पृष्ठ क्रमांक 12 पर प्रकाशित है ।**

प्रविष्टी सशुल्क 250 रुपये (चेक या नगद) यदि आप अपने शहर की शाखा में प्रविष्टी शुल्क जमा करते है तो 300 रुपये प्रति प्रविष्टि शुल्क के साथ प्रविष्टि 10 नवम्बर 2016 तक हमारे कार्यालय 16, महारानी रोड़, या 64 न्यू देवास रोड़, इन्दौर पर भेज सकते है व आपके नगर के स्थानीय प्रतिनिधि के साथ या वाट्सएप्प सुविधा नंबर 9407453066 व हमारे ईमेल golalariya.darshan@gmail.com पर बायोडाटा प्रारुप बैंक में जमा रसीद के साथ भेज सकते है । अंक की प्रति आपको मधुर कोरियर/स्पीड पोस्ट से निश्चित रुप से भेजी जावेगी । **गोलालारीय संचार सेवा का वाट्सएप्प नंबर 9407453066 चर्चा हेतु उपलब्ध नहीं है ।** संपर्क सूत्र – राजेन्द्र जैन 9424013136, बाहुबली जैन 9405903301, कोमलंचद जैन 9329524227।

कृपया काटकर भेजें — कृपया काटकर भेजें

गोलालारीय दर्शन – 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर

*** सदस्यता आवदेन पत्र ***

सदस्यता क्रं. ..... (आपको पते के स्टीकर पर अंकित क्रं. लिखे)

नाम (पिता के नाम सहित) _____

_____

डाक पूर्ण पता _____

_____

_____ **पिन कोड** | | | | | | |

फोन/मोबाइल नं. _____

सामाजिक संस्थाओं में भागीदारी की जानकारी _____

_____

_____

नोट – यदि आपका बैंक खाता भारतीय स्टेट बैंक में है तो आप सदस्यता राशि का चेक काटकर गोलालारीय दर्शन के बैंक खाते में अपनी ही शाखा में जमा करावें ताकि अनावश्यक बैंक शुल्क न लगे । अन्य बैंको से राशि भेजने वाले चेक/डी.डी द्वारा राशि जमा करावें । विवरण नीचे दिया गया है –

प्रविष्टि पंजीयन राशि जमा करने हेतु आप अपना ड्राफ्ट/मल्टीसिटी चैक इस नाम से भरे –

हिन्दी में – ''गोलालारीय दर्शन'' इन्दौर

अंग्रेजी में – "GOLALARIYA DARSHAN", Indore

प्रविष्टि पंजीयन राशि आप हमारे बैंक एकाउंट में जमा भी कर सकते हैं तथा रसीद की फोटोकॉपी फार्म के साथ अनिवार्य रुप से भेजे ।

* बैंक का नाम – स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
* खाता क्रमांक – 63048875855
* IFSC code : SBIN0030134
* ब्रांच – नगर निगम शाखा, इन्दौर

प्रविष्टि शुल्क ₹ 250/-

SBI बैंक की अन्य शाखा में नगद राशि बैंक में जमा करने पर ₹ 300/-

ईमेल golalariya.darshan@gmail.com

आचार्य संहिता का शेष.... प्रभावी होती जा रही है अपनी राष्ट्रभाषा को पीछे धकेल दिया गया है। अंग्रेजी को जानने वाले गिनती के है परन्तु उसे ही हर काम में इस्तेमाल किया जा रहा है । न्याय के क्षेत्र में भी इस भाषा के कारण जनता को परेशानी हो रही है । भारत को अपनी भाषा के प्रति गंभीर होना पडेगा तभी हम सही न्याय कर पाएंगे । मध्यप्रदेश हिंदी को मजबूत करने के लिए तत्पर है परंतु सम्पूर्ण भारत में इसके लिए अभिमान चलाना चाहिए । कार्यक्रम में विशेष रूप से आर्यिका विभाश्री माताजी ससंघ विराजित थीं । इस अवसर पर पक्ष विपक्ष के नेतागण एवं समाज के अनेक वरिष्ठजन उपस्थित थे । *** आचार्यश्री के चौमासे के दौरान अनेक आयोजन नित्य हो रहे है –** आचार्य श्री के सानिध्य में दयोदय महासंघ का सम्मेलन संपन्न हुआ जिसमें आचार्यश्री के आर्शीवाद ओर प्रेरणा से संचालित 250 गौशाला के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए कार्यक्रम में पशुपालन, पर्यावरण मंत्री अंतरसिंह आर्य ने गौ संवर्धन का संकल्प किया । इस दिन देश विदेश से पारस चैनल पर सजीव कार्यक्रम के माध्यम से लाखों रुपये गौशाला के लिए इकट्ठा हुए लोक निर्माण मंत्री रामपाल सिंह ने भी गौ रक्षा के लिए काम करने का संकल्प दोहराया ।

जिनालय का नजारा गुरुकुल जैसा नजर आया जब जैन प्रतिभा स्थली, ज्ञानोदय विद्यापीठ जबलपुर, रामटेक व डोंगरगढ़ की लगभग 1250 छात्राओं से पांडाल खचाखच भर गया । जबलपुर के प्रतिभा स्थली तिलवारा घाट की आठवीं की 110 छात्राओं ने आचार्यश्री की पूजा की इन सभी के साथ 100 से अधिक शिक्षिकाएं थी । छात्राओं ने आचार्यश्री की पूजा अर्चना की उन्होंने मांस निर्यात, बूचडखाने के विरोध में बहुत ही सुंदर नाटकीय प्रस्तुति दी । साथ ही संस्कारित भारत, गुरुकुल का महत्व, भारतीय कृषि, गौरक्षा व हाथ करघा आदि योजनाओं का भी नाटकीय चित्रण किया ।

देश के विभिन्न प्रांतो में लगभग 150 गौशालाओं का संचालन, हाथकरघा योजना द्वारा भारतीय स्वाभिमान बनाये रखना, भाग्योदय तीर्थ, सागर में सामान्य जन हेतु भव्य चिकित्सा सेवा केन्द्र का निर्माण साथ ही आचार्य श्री का विशेष संदेश ''अंग्रेजी नही हिन्दी राष्ट्र बनाना है''। इंडिया नही सुदृढ़ और संस्कार युक्त भारत की कल्पना को सभी शिरोधार्य कर रहे है । 15, 16 अक्टूबर को आचार्य श्री द्वारा विरचित मूक माटी पर एक संगोष्ठी प्रस्तावित है, जिसमें भारत के विश्व विद्यालय के कुलपति, विद्यार्थी, शोधार्थी, मीमांसक अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय का सहयोग रहेगा । आचार्यश्री के मूक माटी ग्रंथ का अंग्रेजी, बंगाली, मराठी में अनुवाद हुआ है ।

स्वास्थ्य के लिए अच्छा है टहलना

टहलना – एक बहुत ही अच्छा व्यायाम होता है । यह शरीर में मौजूद अतिरिक्त वसा को कम करता है । अगर आप हफ्ते में छह दिन भी 30 से 45 मिनिट रोजाना टहलते हैं एक स्वस्थ तथा संतुलित आहार लेते हैं तो आपको वजन में बहुत अंतर महसूस होगा ।

* रोजना तेज़ तेज़ टहलने से आपके शरीर माँसपेशियाँ भी मजबूत बनेंगी और आपकी कार्य करने की क्षमता भी बढ़ेगी ।

* टहलना न केवल आपके दिल के लिए अच्छा है साथ ही यह रक्तचाप को कम करता है और रक्त प्रवाह को भी सही रखता है। इसके अलावा यह पूरे दिन मूड को तरोताजा रखता है, जिससे काम करने में भी मन लगता है । यदि आप किसी के साथ घूमने जाते है तो उस दौरान बातें न करें क्योंकि आप सिर्फ घूमने आये है ।

* रोज़ाना ताजी हवा में जब आप टहलते है तब आपके तनाव में भी कमी आती है, जिससे आपको मानसिक सुकून भी मिलता है।

* रोज़ टहलने से टाइप–2, डायबिटीज़ का खतरा कम होता है। शोध भी बताते है कि रोज़ाना टहलने से डायबिटीज़ की आशंका कम होती है ।

* सर्दियों में गर्म कपड़ें अवश्य पहनें व गर्मियों में आप टहलने के समय में बदलाव करें । आप सुबह टहल लें क्योंकि दिन निकलने के बाद गर्मी ज्यादा हो जाती है ।

* वज़न कम करने के लिए हम न जाने क्या क्या करते हैं, लेकिन आपको पता है सुबह या शाम की एक छोटी–सी सैर आपका वज़न तो कम करती ही है, साथ ही आपके स्वास्थ्य को ठीक रखने का काम भी करती है ।

संकलन – अवनी जैन, पुणे

बेटी की चाहत

बिटिया बड़ी हो गयी, एक रोज उसने बड़े सहज भाव में अपने पिता से पूछा – ''पापा, क्या मैंने आपको कभी रुलाया''? पिता ने कहा – ''हाँ''। उसने बड़े आश्चर्य से पूछा – ''कब''? पिता ने बताया – 'उस समय तुम करीब एक साल की थी, घुटनों पर सरकती थी । मैंने तुम्हारे सामने पैसे, पेन और खिलौना रख दिये क्योंकि मैं यह देखना चाहता था कि, तुम तीनों में से किसे चुनती हो, तुम्हारा चुनाव मुझे बताता कि, बड़ी होकर तुम किसे अधिक महत्व दोंगी। जैसे – पैसे मतलब संपत्ति, पेन मतलब बुद्धि और खिलौना मतलब आनंद । मैंने ये सब बहुत सहजता से लेकिन उत्सुकतावश किया था क्योंकि मुझे सिर्फ तुम्हारा चुनाव देखना था । तुम एक जगह स्थिर बैठी टुकुर टुकुर उन तीनों वस्तुओं को देख रही थी । मैं तुम्हारे सामने उन वस्तुओं की दूसरी ओर खामोश बैठा बस तुम्हें ही देख रहा था । तुम घुटनों और हाथों के बल सरकती आगे बढ़ीं, मैं अपनी श्वांस रोके तुम्हें ही देख रहा था और क्षण भर में ही तुमने तीना वस्तुओं को आजू बाजू सरका दिया और उन्हें पार करती हुई आकर सीधे मेरी गोद में बैठ गयीं । मुझे ध्यान ही नहीं रहा कि, उन तीनों वस्तुओं के अलावा तुम्हारा एक चुनाव मैं भी तो हो सकता हूँ । तभी तुम्हारा तीन साल का भाई आया और पैसे उठाकर चला गया, वो पहली और आखरी बार था बेटा जब, तुमने मुझे रुलाया... और बहुत रुलाया । **आखिर बेटी तो बेटी ही होती है ।**

संकलन – **डॉ. राजेश जैन**, भोपाल

बायोडॉटा प्रारुप का विवरण

1. क्रमांक
2. प्रत्याशी का पूरा नाम
3. स्वयं / मामा का गोत्र
4. जन्म दिनांक
5. जन्म समय [illegible]
6. जन्म स्थान
7. शिक्षा
8. कद / वजन
9. वर्ण
10. व्यवसाय
11. वार्षिक आय
12. कुंडली मिलान
13. मंगली
14. पत्र व्यवहार का पता
15. फोन / मोबाईल नं.
16. प्रत्याशी का ईमेल

प्रत्याशी का नवीन फोटो

---

1. 001
2. **अंकित अशोककुमार जैन**
3. बिलौआ/ओछल्लमूरी कोछल्ल गौत्र
4. 27.09.92
5. 21.09
6. नागौद
7. बी.एस.सी (सी.एस.) ए+ एन+
8. 5'10''/–
9. गौर
10. सर्विस – विब्स इंफोसोल
11. 3.00 लाख
12. हाँ
13. नहीं
14. जैन वस्त्रालय, सिंहपुर चौराहा नागौद, जिला सतना
15. 8435506456, 9826654147
16. -

---

1. 002
2. **वैशाली विलास जैन**
3. फणीस / वैद्य
4. 1.08.90
5. 7.20
6. इन्दौर
7. बी.कॉम फायनल
8. 5'3''/–
9. गोरा
10. सर्विस – केडिला कंपनी
11. –
12. –
13. –
14. 30/4, परदेशीपुरा इन्दौर
15. 9827309259, 9575975079
16. vilas31jain@gmail.com

---

1. 003
2. **राहुल अनिलकुमार जैन**
3. रावत/बिलौआ
4. 18.02.87
5. 23.05
6. इन्दौर
7. एम.बी.ए.
8. 5'6''
9. गोरा
10. होजयरी (निर्माता–विक्रेता)
11. –
12. हाँ
13. हाँ
14. 251/3, जनता कालोनी बड़ा गणपति, इन्दौर
15. 9893005429, 0731-2415528
16. -

---

1. 004
2. **सुशील सुरेशचंद जैन (विधुर)**
3. पटवारी/पंचरत्न
4. 02.07.83
5. 5.10
6. इन्दौर
7. बी.कॉम
8. 5'7''
9. गेहुँआ
10. व्यापार
11. 6.00 लाख
12. –
13. –
14. 40, आजाद नगर, मूसाखेड़ी रोड, इन्दौर
15. 9753271580, 9424012460

नोट – 2 बच्चे

---

1. 005
2. **अंकेश रविन्द्र जैन**
3. फणीश/सुहावने
4. 21.10.88
5. 23.20
6. पृथ्वीपुर
7. इंजीनियरिंग
8. 5'7''/65 कि.
9. गौर
10. सर्विस – टीमलीड, गुड़गांव
11. 12.00 लाख
12. हाँ
13. नहीं
14. जैन मोहल्ला, पृथ्वीपुर जिला टीकमगढ़
15. 09755734611, 09923005616
16. ankesh.jain21@gmail.com

---

1. 006
2. **राहुल राकेशकुमार जैन**
3. दिवाकीर्ति/बिलौआ
4. 22.12.88
5. 10.00
6. खुरई
7. बी.ई. (कम्प्यूटर सांइस)
8. 5'4''
9. गोरा
10. सर्विस टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज
11. 7 अंको में
12. –
13. नहीं
14. जैन हार्डवेयर स्टोर, स्टेशन रोड खुरई
15. 07581-241096, 9425671819
16. –

---

1. 007
2. **अंजली स्व. अजीतकुमार जैन**
3. पवैया/मणी
4. 6.09.87
5. 9.08
6. इन्दौर
7. एम.कॉम, सी.ए अध्ययनरत
8. 5'5''/49 कि.
9. गोरा
10. –
11. –
12. –
13. –
14. 60, न्यू देवास रोड, राजकुमार ब्रिज के पास, इन्दौर
15. 9977773391, 8359892764
16. indanjali2007@gmail.com

विवाह योग्य प्रत्याशी विशेषांक 2016

दिसम्बर 2016 में गोलालारीय दर्शन का अंक 'विवाह योग्य प्रत्याशी विशेषांक' रहेगा । प्रविष्टी सशुल्क हमारे पत्रिका कार्यालय या वाट्सएप्प नं. 9407453066 या ईमेल पर जमा रकम की रसीद के साथ भेज सकते है । पवाजी के वार्षिक मेले में भी प्रविष्टी स्वीकार की जावेगी ।

❋ 5 व 5 से अधिक तपसाधना करने वाले सम्मानीय श्रावकगण ❋

पदमा जैन, इन्दौर (11)

प्रज्ञा जैन, सागर (11)

नागेन्द्र जैन, इन्दौर

मीना जैन, इन्दौर

नेहा जैन, इन्दौर

प्रियंक जैन, इन्दौर

भूमिका जैन, इन्दौर

शिल्पा जैन, इन्दौर

रेखा जैन, इन्दौर

रेशू जैन, इन्दौर

सौरभ जैन, इन्दौर

अशोक जैन, इन्दौर

आशा जैन, इन्दौर

शांतकुमार जैन, पन्ना

रश्मि जैन, बबीना

सचिन जैन, पृथ्वीपुर

निशा जैन, पृथ्वीपुर

अंजली जैन, ग्वालियर

अनुश्री जैन, मुंबई

अभिषेक जैन, मुंबई

अतुल जैन, दिल्ली

एकता जैन, झांसी

मोनिका जैन, बबीना

नीता जैन, भोपाल

कुसुम जैन, अहमदाबाद

मोहित जैन, झांसी

सिद्धार्थ जैन, कुरवई

श्वेता जैन, पन्ना

रत्नेश जैन, डिण्डोरी

रिंकी जैन, बबीना

स्वदेश जैन, अहमदाबाद

श्रुति जैन, अहमदाबाद

नम्रता जैन, पन्ना (6)

सुलोचना जैन, इन्दौर

विमल जैन, इन्दौर

प्रियंक जैन, इन्दौर

उषा जैन, इन्दौर

दिव्या जैन, गंजबासौदा

निधि जमोरिया, नसीराबाद

राजमती धमसैया, अहमदाबाद

बायोडॉटा प्रारुप का विवरण

प्रारुप की फोटोकॉपी भी मान्य है।

1. क्रमांक
2. प्रत्याशी का पूरा नाम (पिता सहित) _____
3. स्वयं / मामा का गोत्र _____ / _____
4. जन्म दिनांक _____
5. जन्म समय (रेलवे समयानुसार) _____
6. जन्म स्थान _____
7. शिक्षा _____
8. कद / वजन ☐ फीट ☐ इंच / ☐ किलो
9. वर्ण _____
10. व्यवसाय / नौकरी _____
11. वार्षिक आय _____
12. कुंडली मिलान - हॉ ( ) / नहीं ( )
13. मंगली - हॉ ( ) / नहीं ( )
14. पत्र व्यवहार का पता _____
15. फोन / मोबाईल नं. _____
16. अन्य संपर्क सूत्र _____

फोटो के पीछे अपना नाम व शहर का नाम अवश्य लिखे

प्रत्याशी का नवीन फोटो प्लास्टिक की थैली फार्म के साथ संलग्न करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है, सम्पादक मण्डल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है । किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

स्वामी श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास के लिए प्रकाशक, मुद्रक बाहुबली जैन द्वारा प्रकाशित प्रतीक्षा ग्राफिक्स127, देवी अहिल्या मार्ग इन्दौर से मुद्रित एवं ग्राफिक्स ज़ील कम्प्यूटर एंड ग्राफिक्स 356, तिलक नगर श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित